मृत्यु के पश्चात्
–वीरेन्द्र गुप्तः

''भूषण''

पितृ चरणों में

बोध क्रम ५२ ॥ ओ३म् खं ब्रह्म ॥ प्रकाश क्रम २४

मृत्यु के पश्चात्

(पुनर्जन्म)

लेखक

वीरेन्द्र गुप्तः

राष्ट्रीय सम्वत् ६२

सृष्टयाब्द १,९७,३८,१३,११०

मानव सृष्टि वेद काल १,९६,०८,५३,११०

दयानन्दाब्द १८६

विक्रम सम्वत् २०६६

सन २००९ ई०

प्रकाशक :—

वेद संस्थान

मण्डी चौक, मुरादाबाद

प्राप्ति स्थान :—

वीरेन्द्र नाथ अश्विनी कुमार
प्रकाशन मन्दिर
मण्डी चौक, मुरादाबाद—२४४००१
चलितवार्ता ९८९७५२८९५०

आवास :—

वेद कुटि '९३'
राम बिहार कालोनी
जिला सहकारी बैंक के पीछे,
मुरादाबाद—२४४००१

प्रथम संस्करण

दो हजार

मूल्य :—

सत्य को ग्रहण करना और असत्य को छोड़ना

कम्प्यूटर :— यूनिक प्रिन्टर्स

वेद संस्थान

की साहित्य सेवा

वेद संस्थान की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०४८ रविवार १७ मार्च १९९१ को हुई।

वेद संस्थान का लक्ष्य है—सद्साहित्य, साधन के अनुसार निःशुल्क, अल्पमूल्य अथवा लागत मूल्य पर आपके पास तक पहुँचता रहे। हमने अब तक १—विनयामृत सिन्धु, २— अभिनन्दनीय व्यक्तित्व, ३— विवेकशील बच्चे, ४— जन्म दिवस, ५— योग परिणति, ६— करवा चौथ, ७— दैनिक पंच महायज्ञ, ८— गोधन, ९— पर्वमाला, १०— दाम्पत्य दिवस, ११— छलकपट और वास्तविकता, १२— ईश महिमा, १३— मन की अपार शक्ति १४— रत्न माला १५— नयन भास्कर १६— युधिष्ठिर यक्ष गीता, १७— यज्ञों का महत्व १८— वेद उद्गीत, १९— दर्पण २०— राष्ट्रीय गौरव २१— संस्कार २२— वातायन २३— जीव निराकार या साकार नामक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इसी श्रंखला में श्री वीरेन्द्र गुप्तः द्वारा रचित कृति २४. वीं पुस्तक "मृत्यु के पश्चात्" प्रस्तुत है। यह प्रस्तुति वेद संस्थान की और सहयोग दानी महानुभावों का है। इस सहयोग और उदार भाव के लिये वेद संस्थान उनका आभारी है।

हमें आशा है कि आप वेद संस्थान को पूर्ण सहयोग देकर नूतन साहित्य प्रकाशित करने का अवसर अवश्य प्रदान करते रहेंगे।

विजय कुमार	वेद संस्थान	अम्बरीष कुमार
प्रकाशन सचिव	मण्डी चौक, मुरादाबाद	सचिव

लेखक परिचय

नाम — श्री वीरेन्द्र गुप्तः
जन्म — श्रावण शुक्ल ६, संवत् १९८४, बुद्धवार ३ अगस्त, १९२७ ई०, मुरादाबाद
गृहस्वामिनी — श्रीमती राजेश्वरी देवी
सम्प्रति — व्यवसाय

सम्मान :

१— १४ सितम्बर १९८२ राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रसार समिति।
२— ३ अक्टूबर १९८२ आर्यसमाज मण्डी बाँस, मुरादाबाद।
३— १४ सितम्बर १९८८ श्री यशपाल सिंह स्मृति साहित्य शोधपीठ, मुरादाबाद।
४— ३० सितम्बर १९८८ अहिवरण सम्मान पुरालेखन केन्द्र, मुरादाबाद।
५— २ जनवरी १९९२ साहू शिवशक्ति शरण कोठीवाल स्मारक समिति, मुरादाबाद। द्वारा साहित्य सम्मान
६— ७ जनवरी १९९६ अभिनन्दन समिति द्वारा नागरिक अभिनन्दन एवं अंभिनन्दन ग्रन्थ तथा सामूहिक अभिनन्दन पत्र।
७— ६ मार्च १९९९ अखिल भारतीय माथुर वैश्य महासभा द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन ग्वालियर में (साहित्य) समाज शिरोमणी सम्मान।
८— ९ मई १९९९ विराट आर्य सम्मेलन पश्चिमी उत्तर प्रदेश मेरठ (आर्य शिरोमणी) सम्मान।
९— २६ जनवरी २००० माथुर वैश्य मण्डल, मुरादाबाद द्वारा (साहित्यक शताब्दी पुरुष) सम्मान।
१०— २५ फरवरी २००० (अमृत महोत्सव) के अवसर पर संस्कार भारती, मुरादाबाद द्वारा अभिनन्दन।
११— १५ सितम्बर २००० (राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सहस्त्राब्दी सम्मान) सहस्त्राब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन नई देहली के द्वारा। सँयुक्त राष्ट्र संघ (यूनैस्को) आदि से सम्बद्ध।
१२— १७ सितम्बर २००० "ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय, रामपुर" हिन्दी दिवस पर सम्मान।
१३— १४ सितम्बर २००३ हिन्दी साहित्य सदन द्वारा 'हिन्दी साहित्य सम्मान'।
१४— २६ जनवरी २००७ माथुर वैश्य मण्डल मुरादाबाद द्वारा 'युग पुरुष' सम्मान।

उल्लेख :

१— हिन्दी साहित्य का इतिहास ले० डा० आलोक रस्तौगी एवं श्री शरंण, देहली १९८८।

२— "आर्य समाज के प्रखरव्यक्तित्व" दिव्य पब्लिकेशन केसरगंज अजमेर १९८९।

३— "आर्य लेखक कोष" दयानन्द अध्ययन संस्थान जयपुर १९९१।

४— एशिया—पैसिफिक "हू इज़ हू" (खण्ड ३) देहली २०००।

५— गंगा ज्ञान सागर भाग ४ पृष्ठ २३ सन् २००२।

प्रकाशित कृतियाँ :

१— इच्छानुसार सन्तान, २— लौकिट (उपन्यास), ३— पुत्र प्राप्ति का साधन, ४— पाणिग्रहण संस्कार विधि, ५— How to be get a son,(अनुवादित) ६— सीमित परिवार, ७— बोध रात्रि, ८— धार्मिक चर्चा, ९— कर्म चर्चा, १०— सस्ती पूजा, ११— वेद में क्या है? १२— गर्भावस्था की उपासना, १३— वेद की चार शक्तियाँ, १४— कामनाओं की पूर्ति कैसे, १५— नींव के पत्थर, १६— यज्ञों का महत्व, १७— ज्ञान दीप, १८— The light of learning (अनुवादित) १९— दैनिक पंच महायज्ञ, २०— दिव्य दर्शन, २१— दस नियम, २२— पतन क्यों होता है, २३— विवेक कब जागता है, २४— ज्ञान कर्म उपासना, २५— वेद दर्शन, २६— वेदांग परिचय, २७— संस्कार, २८— निरकार साकार के स्वरूप का दिग्दर्शन, २९— मनुर्भव, ३०— अदीनास्याम, ३१— गायत्री साधन, ३२— नव संम्वत्, ३३— आनुषक (कहानियाँ), ३४— विवेकशील बच्चे, ३५— जन्म दिवस, ३६— करवा चौथ, ३७— योग परिणति, ३८— पर्वमाला, ३९— दाम्पत्यदिवस, ४०— छलकपट और वास्तविकता, ४१— श्रद्धा सुमन, ४२— माथुर वैश्यों का उद्गम, ४३— ईश महिमा, ४४— मन की अपार शक्ति, ४५— नयन भास्कर, ४६— युधिष्ठिर यक्ष गीता, ४७— वेद उद्गीत, ४८— दर्पण, ४९—राष्ट्रीय गौरव, ५०— वातायन, ५१— जीव निराकार या साकार, ५२— मृत्यु के पश्चात्।

वीरेन्द्र गुप्त:

बोधक

वन्दना

।। ओ३म् ।।

हिरण्येन पात्रेण सत्यामिहितं मुखम्।।

यजुर्वेद ४०/१७

स्वर्णाम्बर के पात्र से सत्य का मुख ढ़का हुआ है।

उद्देश्य

ईशावास्यमिद ँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

यजुर्वेद ४०/१

इस सृष्टि में जो कुछ भी चर, प्राणी, जंगम संसार या गतिशील है वह सब सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से व्याप्त है। उससे त्याग किये हुए, या उस परमेश्वर से दिये हुए पदार्थ से भोग सुख अनुभव कर। किसी के भी धन लेने की चाह मत कर। अथवा यह धन किसका है? किसी का भी नहीं, केवल परमात्मा का है। इसलिये लालच मत कर।

असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

यजुर्वेद ४०/३

लोक अर्थात् मनुष्य असुर कहाने योग्य, केवल अपने प्राण का पोषण करने हारे पापाचारी हैं। जो अन्धकार रूप आत्मा को ढ़क लेने वाले तमोगुण से ढ़के हैं। जो कोई लोग भी अपनी आत्मा का घात करते हैं, उसके विरुद्ध आचरण करते हैं, वे मर कर और जीवन काल में भी उन उक्त प्रकार के लोकों को ही प्राप्त होते हैं।

यद्धात्रा निजभाल पट्टलिखितं स्तोकं महद्वा धनं
तत्प्रप्नोति मरुस्थले ऽपि नितरां मेरौततोनाधिकम्।
तद्धीरो भवीवत्ततत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथा
कूपेश्यपयोनिधावपिघटो गृह्णाति तुल्यंजलम्।।

नीतिशतक ४९

विद्याता ने भाग्य (अर्थात् आचार, विचार औंर कर्मों का विषलेशण) में थोड़ा या बहुत जितना धन के लिये पात्र दिया है। उतना मरु—भूमि में भी उसे मिलता ही है। सुवर्णमय्य मेरुपर्वत पर जाने पर भी उससे अधिक उसको नहीं मिल सकता, इसलिये अपने भाग्य पर ही सन्तोष करो, धनिकों के आगे दीन मत बनो देखो कूप अथवा सागर में घड़ा डालने पर भी वह पात्रानुसार ही पानी लेता है।

प्राप्तव्यमर्थ लभते मनुष्यो.
दैवोऽपितं लंघयितुंन शक्तः।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे
यदास्यदीयं न हितत्परेषाम्।।

पञ्चतन्त्र २/११४

प्राप्त होने योग्य धन मनुष्य को प्राप्त होता ही है। देव भी उसका उल्लंघन करने में समर्थ नहीं होते। इस कारण न मैं सोच करता हूँ और न मुझे विस्मय ही होता है। क्योंकि जो हमारा है, वह दूसरों का नहीं हो सकता।

यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न पदन्यथा।
इति चिन्ताविषंहनोऽयपगदः किं न पीयते।।

हितोपदेष सन्धि ८

जो नहीं होना है, वह नहीं होगा और जो होना है वह होकर ही रहेगा। चिन्ता रूपी विष को दूर करने वाली इस औषधि को क्यों नहीं पीता।

नाहारं चिन्तयोत्प्राज्ञो धर्म मेकं हिचिन्तयेत्।
आहारो हि मनुष्याणां जन्मना सहजायते।।

चाणक्य नीति १२/१८

बुद्धिमान पुरुष भोजन की चिन्ता न करे किन्तु एक धर्माचरण का ही चिन्तन करें। भोजन तो मनुष्य के जन्म के साथ ही उत्पन्न होता है।

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानि कृन्तति।।

मनुः

किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है उसी समय फल भी नहीं होता। इसीलिये अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचारण धीरे–धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है।

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति।।

चाणक्य १५/६

अनीति से अर्जित धन दस वर्ष पर्यन्त ठहरता है और ग्यारहवें वर्ष के प्राप्त होने पर मूल सहित नष्ट हो जाता है।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमायति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणः, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

चरित्र को यत्न से रक्षित करना चाहिये, द्रव्य आता है और जाता है। धन से रहित व्यक्ति क्षीण नहीं होता, चरित्र से हीन व्यक्ति नष्ट हो जाता है।

आवागमन सत्य है, जो जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार शरीर पाता है, अच्छे कर्म करने से मनुष्य का और बुरे कर्म करने से पक्षी आदि का। उत्तम कर्म करने से मनुष्य योग्य बनता है, अधिक उत्तम कर्म करने से देवता अर्थात् विद्वान् और बुद्धिमान होता है और अति उत्तम कर्म करने से राज्यकर्त्ता न्यायाधीश, राष्ट्रपति, सैनानायक, योगी और ऋषि बन जाता है। संसार में लोगों को धनाढ्य, कंगाल, सुखी, दुःखी, अनेक प्रकार के ऊँचे–नीचे देखने से विदित होता है कि यह सब पूर्व जन्म के कर्मों के कारण ही है। उपरोक्त नीति कारों का भी यही कथन है। उसमें भी हर्ष–विशाद, चलता ही रहता है। यदि हर्ष–विशाद न हो तो जीवन नीरस बन जाता है।

निरुद्देश्य कार्य निरर्थक हो जाता है। उद्देश्य पूर्ण कार्य सफल होता जाता है। मेरा कार्य भी उद्देश्य को लेकर ही है।

संसार में धन के संग्रह करने की होड़ लगी है। धन का अधिक संग्रह बिना पाप के नहीं होता। बिना भाग्य पात्र के धन का भी संग्रह नहीं हो सकता।

कुछ अच्छे कर्मों के अनुसार, हम लोगों के विश्वास पात्र बने मन्दिर आदि के सर्वेसर्वा बनकर दान का पैसा खा कर गर्व करने लगे। औरों को नीचा समझने लगें। विद्यालय में प्रधानाचार्य अथवा प्रबन्धक बनकर बच्चों से अतिरिक्त फीस लेकर उसे जमा न करना और आपस में बाँट लेना। झूठ बोल कर चालाकी से मक्कारी से कुछ अधिक पैसा प्राप्त करके प्रसन्न होना।

अथवा हमें पूर्व जन्म के कर्मानुसार धनिक गृह में जन्म मिला कई और नये उद्योग लगाये। हम नित्य क्या देखते हैं? आज हमने कितनी बिजली की चोरी की, कितना एक्साईज की चोरी की, उस जोड़ को देखकर हम मन ही मन अति प्रसन्न होते हैं। यह हमारा पागलपन है। अरे पगले! नीति शतक के अनुसार जो तू जितना बड़ा भाग्य रूपी पात्र लेकर आया है, वह तो भरना ही भरना है। यह तो तुझे मिलना ही था। बस तूने इसके संग्रह में जो चोरी करने का पाप कर्म जोड़ लिया, यह अच्छा नहीं किया। मनुजी महाराज के अनुसार तूने तो यह पाप कर्म करके आगे के सुख के मूलों को स्वयं ही काट लिया, जरा सोच, विचार। क्या यह सही किया? किया हुआ कर्म कभी निश्फल नहीं होता। नीति अनुसार पापार्जित धन बहुत समय तक नहीं रहता।

मेरा उद्देश्य हर प्रकार से आपके नेत्रों को खोलना है। मैंने इस पुस्तक में बहुत सी घटनाओं को न देकर केवल सार रूप घटना ही दी हैं। व्यर्थ का कलेवर बढ़ाने से कोई लाभ नहीं। हर घटना हमें नया मार्ग देती है। हमारी हर शंका का समाधान करती है। इसे ही समझाने के उद्देश्य से यह आपके पास तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य है, आप इसका मनन करें, समझें और सही बात को स्वीकार भी करे।

घटनायें

१. इल्मउद्दीन का पुनर्जन्म

लाहौर पंजाब का एक बड़ा प्रसिद्ध नगर है, उसी में राजपाल एण्ड सन्स के नाम से एक साहित्य प्रकाशन का संस्थान महाशय राजपाल जी चलाते थे। वह वेदों के विद्वान और आर्य संस्कृति के पूर्ण ज्ञाता थे। मुसलमानों के हर प्रश्न का मुह तोड़ उत्तर देते थे। इसी कारण महाशय राजपाल जी की हत्या की योजना बनी और ६ अप्रैल १९२९ के दिन इल्मउद्दीन नामक एक व्यक्ति ने महाशय राजपाल जी के ऊपर दुकान पर ही छुरे से ऐसा भीषण प्रहार किया कि उसी समय ही महाशय राजपाल जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग कर दिया। इल्मउद्दीन को पकड़ने के लिये कर्मचारी भागा, सारे बाजार में शोर मचा गया। महाशय जी का आवास दुकान के पास ही उर्दू दैनिक "प्रताप" के कार्यालय के पास दूसरी मंजिल पर था। श्री राजपाल जी की धर्म पत्नी ने भी अपनी आँखों से यह सारा दृश्य देखा।

हत्यारा भागा परन्तु लाहौर के प्रसिद्ध आर्य महाशय सीताराम जी के सुपुत्र महाशय विद्यारत्न ने उसे अपनी बाहों में ऐसा जकड़ा कि वह भाग न सका। केस चला। पाकिस्तान के संस्थापक कायदे आज़म जिन्ना को पैरवी के लिये मुम्बई से बुलाया गया और साथ में मिस्टर सलीम एडवोकेट ने भी साथ दिया, परन्तु उनकी पैरवी के पश्चात् भी इल्मउद्दीन को फाँसी पर चढ़ाया गया।

एक रात इल्मउद्दीन मरने के बाद अपनी पड़ोसन चराग बीबी से स्वप्न में मिला और कहा "मेरी माननीया माता से कह देना कि वह रोया न करे, मैं शीघ्र ही घर आ जाऊँगा।" इसके पश्चात् इल्मउद्दीन ने अपनी गर्भवती भाभी की कोख से पुन: जन्म लिया। इल्मउद्दीन के पुनर्जन्म पर इस्लामी भाई भाव विभारे हैं।

(यह घटना 'नबी का पैग़ामे मौत' पुस्तक लेखक प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर से उपलब्ध)

२. मोहन ब्रादर्स

नगर मुरादाबाद में चौराहा टाउनहाल पर एक दुकान मोहन ब्रादर्स के नाम से बहुत प्रसिद्ध थी। उस दुकान के बिस्कुट, सोडा वाटर, मक्खन आदि दूर–दूर तक प्रसिद्ध था, बड़े भाई का नाम मोहनलाल था। जो सारे व्यापार की देख रेख करते रहते थे। छोटे भाई परमानन्द सोडा वाटर की मशीनों को देखा करते थे। किन्हीं कारणों से परमानन्द की मृत्यु हो गई।

मोहन ब्रादर्स के बिस्कुट मक्खन, ग्राम–ग्राम में प्रातःकाल फेरी लगा कर लोग बेचा करते थे। एक दिन बच्चे ने बिस्कुट के लिये कहा और माता ने बिस्कुट बेचने वाले से बिस्कुट खरीद कर बच्चे को दे दिये। बच्चा बिस्कुट खाने से रुक गया और कहने लगा कि यह बिस्कुट मेरी दुकान के हैं। माता ने सुनकर कहा–क्या कह रहा है? बच्चे ने कहा–मेरी दुकान मेरे बड़े भाई मोहन ब्रादर्स के नाम से मुरादाबाद में टाउनहाल पर हैं। यह बिस्कुट उसी दुकान के हैं। अगले दिन माता ने बिस्कुट बेचने वाले से कहा–उसने बताया कि हम मोहन ब्रादर्स की ही दुकान से बिस्कुट लाकर बेचते हैं।

बच्चे ने मुरादाबाद चलने के लिये कई बार माता–पिता से आग्रह किया। पिता ने एक पत्र उसके द्वारा बताये पते पर सारी चर्चा लिख कर डाला। पत्र का उत्तर भी आया। बच्चे ने मुरादाबाद चलने के लिये जिद की, और कहा–वहाँ पर मेरी स्त्री और बच्चे भी हैं। पत्नी के लिये एक साड़ी भी ले चलने को कहा। बाल हट के आगे पिता झुक गये और मुरादाबाद चलने का कार्यक्रम बना लिया। मोहन ब्रादर्स के पते पर अपने आने की तिथि, दिन, समय और किस गाड़ी से आ रहे हैं, यह सब लिखकर डाल दिया।

मोहन लाल जी गाड़ी के आने की प्रतीक्षा में खड़े थे। उधर से पिता के साथ बालक भी आ रहा था। दोनों में से कोई किसी को नहीं पहचानता था। इस कारण मोहन लाल जी रेलवे स्टेशन के इन्टर

गेट के बाहर ही खड़े थे। गाड़ी आई, बच्चा शीघ्रता से उतर कर इन्टर गेट की ओर को भागा, ऐसा लगता था कि वह उस स्थान से पूर्ण परिचित हो। गेट के बाहर बड़े भाई मोहन लाल जी को देखकर झट उछलकर उनके गले से लिपट गया, और कहने लगा भाई आपने मुझे नहीं पहचाना? मैं परमानन्द हूँ।

तीनों जने घोड़ा ताँगे में बैठ कर आने लगे, मोहन लाल जी के संकेत पर ताँगे वाले ने टाउनहाल के पहले गेट पर जहाँ कभी एक खड़ी कब्र बनी हुई थी, उसी के पास ताँगा खड़ा कर दिया और कहा उतरो? बच्चे ने कहा नहीं अभी आगे चलो। ताँगा चलने लगा और वह चौराहे पर आकर रोक दिया। बच्चा शीघ्रता से ताँगे पर से उतरा और अपनी दुकान की ओर जाने लगा। वह पहुँचकर जिस गद्दी पर बैठकर सोडावाटर बेचता था वहीं जाकर बैठ गया।

यह समाचार सारे नगर में हवा के समान फैल गया। उसे देखने के लिये नगर की सारी जनता मोहन ब्रादर्स की दुकान की ओर ही जाने लगी।

अगले दिन डा० जगदीश जो २ वर्ष पूर्व ही एम.बी. बी.एस. कर के आये थे, विचारों से अनीश्वर वादी थे, वह अपना ताँगा लेकर गये, बच्चे से बात करी कुछ विश्वास नहीं बना। डा० साहब ने कहा—क्या तुम्हारी कोई और दुकान भी है? बच्चे ने कहा—गुरहट्टी पर विक्ट्री होटल के नाम से है। उसी समय डा. साहब ने बच्चे को ताँगे में बैठकार अपने साथ ले गये और गुरहट्टी के चौराहे पर ही ताँगा रोक दिया, बच्चा उतर कर अपनी दुकान विक्ट्री होटल पर चला गया। इस घटना से डा. जगदीश जी के मन में कुछ आस्तिक भाव जागे।

एक कर्मचारी ने आकर कहा—मशीन काम नहीं कर रही, बोतल में पानी नहीं आ रहा, उसी समय बच्चा उठकर गया, देखा और कहा—पानी, बन्द है, इसे खोलो, खोलते ही पानी आने लगा।

एक दिन मोहन लाल जी ने कहा—कोई और पहचान बताओ। बच्चे ने कहा मेरे कमरे में एक अलमारी है उसके नीचे के कोने में मैंने

एक मिट्टी की हाँडी में चाँदी के ५०/— रुपये दवा कर रखे थे। खोदकर देखा तो ५०/— रुपये चाँदी के निकले।

चलते समय अपनी पत्नी को साड़ी देने को कहा पिता जान बूझ कर घर हीं साड़ी छोड़ आये थे। बच्चे ने इस बात का बहुत बुरा माना।

३. मुसलिम परिवार म पुनर्जन्म

इस्माइल जो पूर्व जन्म में अबीत था छोटा सा लड़का इस्माइल अपने जन्म स्थान से लगभग एक किलोमीटर दूर प्रथम बार आया था, वहाँ पर आइसक्रीम बेचने वाले को देखकर अचानक कह बैठा "क्या तुम मुझे पहचानते हो? आइसक्रीम वाले का नाम मेहमत था। उसने इस बच्चे को पहले कभी देखा ही नहीं, तो कैसे पहचानता। उसने गरदन हिलाकर मना कर दिया।

इस पर बच्चे ने कहा—मैं अबीत सुजुलमस हूँ। आइसक्रीम कब से बेचने लगे हो? तुम तो सब्जियाँ बेचते थे। आश्चर्य से बालक की ओर देखते हुए मेहमत ने इसे स्वीकार किया। वह सोचने लगा इतना छोटा बालक अपने आपको अबीत सुजुलमस कैसे बता रहा है। वह जानता था कि अबीत सुजुलमस फलों और सब्ज़ियों का थोक व्यापारी था। उसके बाग बगीचे भीं थे। बाग—बगीचों में कई नौकर काम करते थे। वह जानता था कि एक बार तीन व्यक्तियों ने मिलकर उसकी हत्या कर दी थी। मेहमत ने कहा तुम अबीत सुजुलमस कैसे हो सकते हो?

पिता ने बताया यह मेरा लड़का इस्माइल है, इसने छोटी सी आयु से ही अपने पिछले जन्म के बारे में मुझे बताना शुरु कर दिया था।

डेढ़ वर्ष की आयु में एक दिन बोला "यहाँ रहते—रहते मेरा मन भर गया, अब मैं अपने बच्चों के पास जाना चाहता हूँ।

उसके पिता अपने बच्चे इस्माइल की बातों पर चुप रहते और परेशान भी हो उठते थे। उनके सभी नातेदार सम्बन्धी आदि सब चक्कर में पड़ गये थे।

इस्माइल का जन्म सन् १९५६ में हुआ था और वह परिवार में अपने पिता की नवमी सन्तान था। जन्म के साथ से ही उसके शरीर पर अन्य बच्चों से अलग लक्षण मिले थे। उसके सिर पर जख्म के निशान की तरह गड्ढ़ा था और बड़ा होते होते वह निशान मिटता चला गया।

उसकी इस पूर्व जन्म की स्मृति पर सभी अचंभित थे। अबीत सुजुलमस का नाम, नगर प्रसिद्ध था। वह एक सम्पन्न व्यापारी था, उसके कई नौकर कर्मचारी थे। उसकी पहली पत्नी हातिस के कोई सन्तान नहीं थी, इसलिये उसे तलाक दे दिया था और अपनी सम्पत्ति में से उसके लिये व्यवस्था भी कर दी थी। इसके पश्चात् एक सुन्दर स्त्री से विवाह किया और उससे सुजुलमस को सन्तान सुख मिला।

अबीत से एक कर्मचारी ने आकर कहा—अस्तबल जाकर देखिये एक घोड़ा लंगड़ा है। सुजुलमस तुरन्त उसके साथ अपने अस्तबल में गया, वहाँ दो अन्य व्यक्ति पहले से ही उपस्थित थे। वह झुककर घोड़े की टाँग को देखने लगा। तभी एक ने अचानक लोहे की छड़ से उसके सिर पर भरपूर वार किया। सुजुलमस के मुख से एक अत्यन्त भयानक आह भरी आवाज निकली और वह वहीं पर ही ७९ हो गया। उसकी वेदना पूर्ण भयंकर आवाज घर के भीतर घुस कर उसकी बीबी शाहिदा और उसके दोनों बच्चों के कानों में पड़ी, वह तुरन्त अस्तबल की ओर भागे, उनके पहुँते ही उन तीनों हत्यारों ने उन तीनों की भी हत्याकर दी और भाग गये। हत्यारें पकड़े गये। दोनों को फाँसी की सजा और एक जल में ही मर गया।

इस घटना के कुछ महीनों के पश्चात् वहाँ २ किलो मीटर की दूरी पर अदन में इस्माइल का जन्म हुआ उसके सिर पर चोट का निशान था। जब वह तीन वर्ष का हो चुका था तो पूर्व जन्म के परिवार जनों से और इस जन्म के नये परिवार जनों ने उसे अपने यहाँ आने जाने की खुली छूट दे रखी थी। वह खुले शब्दों में कहता था कि मैं विवाहित हूँ, मैंने दो शादियाँ की थी। पहली पत्नी से कोई

सन्तान नहीं थी। दूसरी पत्नी शाहिदा सुन्दर थी, ५० वर्ष की आयु में मेरी हत्या नौकरों ने की थी, उसमें एक का नाम रमजान था, जिसने मेरे सिर पर लोहे की छड़ से वार किया था और मैं उसी समय मर गया था। मेरी चीतकार सुनकर पत्नी दो बच्चों सहित वहाँ आये और उनको भी वहीं मार डाला था।

ये सारी घटना अक्षरश: सत्य थी और नगर के सभी लोग सुजुल्मस की निर्मम हत्या के बारे में जानते थे।

यह सब सुनकर आइसक्रीम वाले ने आश्चर्य से इस्माइल की ओर देखा। इस बीच इस्माइल ने आइसक्रीम लेकर ख़ायी थी। इस्माइल के पिता जब उसे पैसे देने लगे तो इस्माइल ने तुरन्त रोक दिया और कहा—यह अभी भी मेरा कर्जदार है, मेरे पिछले जन्म में यह मेरे ही यहाँ से सब्जियाँ लेकर बेचता था। मेरे हिसाब में अभी भी इसकी ओर बकाया रुपये निकलते हैं। इस्माइल के पिता ने आश्चर्य से देखा तो मेहमत आइसक्रीम वाले ने कहा—पैसे रहने दीजिये, इस्माइल ठीक कहता है।

४. तीन जन्मों की याद

रोहतक के समीप एक करैन्थी ग्राम की एक आठ वर्षीय निर्धन परिवार में जन्मी बाला-अपने पूर्व के दो जन्मों की चर्चा करती रहती थी। पिछले जन्म में वह पानीपत में लड़का थी। उस जन्म के भाइयों को याद करके रोती हीं रहती और उदास हो जाती थी। उस जन्म में वह उदर शूल के रोग से ग्रसित होकर उसी में समाप्त हो गई और फिर गाय बनी, फ़िर कसाई ने काट कर समाप्त कर दिया और उसके पश्चात् अब लड़की के रूप में जन्म लिया। यह घटना श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखकर भेजी।

वह कहते हैं कि मेरे ससुर श्री चरमानन्द विद्यार्थी आर्य थे। उन्होंने उस लड़की की चर्चा सुनी। वह गये, निर्धन माँ बाप को बच्ची

को साथ लेकर पानीपत चलने को कहा, निर्धनता के कारण मना कर दिया। तब विद्यार्थी जी उसे अपने घर पर लाए। मेरी पत्नी ने उसे देखा और रात को उनके घर पर ही रही। भाइयों के लिये बहुत उदास होती और रोती थी। विद्यार्थी जी ने यह चर्चा आर्य समाज के सत्संग में की। इसकी सत्यता को स्थापित करने के लिये आर्य समाज की ओर से विद्यार्थी जी को पानीपत पूरी जाँच करने के लिये बच्ची के साथ भेजा। बच्ची ने बताया मेरा घर बुलबुल बाजार में था। मालूम करने पर पता चला इस नाम का बाजार यहाँ पर है। बुलबुल बाजार में पहुँचे और बालिका ने उस वैद्य की दुकान भी दिखाई जिससे उसकी उदर शूल की औषधि ली गई थी।

वैद्य जी ने कहा देश विभाजन के बाद पाकिस्तान से आये एक परिवार के युवक को उदर शूल हुआ था। थोड़ी दूरी पर उसका घर बताया और रात को ही इसी रोग में मर गया। उसके पिता ड्राईंग मास्टर थे। तब पाकिस्तान से आये लोग इधर उधर भटक रहे थे, पता नहीं काम धंधा न चलने से वह परिवार किधर चला गया। सुनते हैं लुधियाना चला गया, वहाँ से कोई पता न चला। विशेष ध्यान देने योग्य यह बात है कि बालिका बस से उतर कर स्वयम् बुलबुल बाजार का रास्ता ठीक—ठीक बताती हुई चल रही है और वैद्य जी की दुकान पर पहुँच गई।

श्री चरमानन्द विद्यार्थी जी बालिका को रोहतक वापिस लाकर उसके माता पिता के पास पहुँचा दिया।

वास्तव में पुनर्जन्म के उदाहरणों से कई एक ऐसे भी तथ्य सामने आये हैं जब किसी व्यक्ति ने बताया कि मैं पूर्व जन्म में पशु था।

चन्चल कुमारी नामक एक बालिका ने बताया कि वह पिछले जन्म में गाय थी, वृद्ध हो जाने के कारण उसके स्वामी ने उसकी हत्या करा दी थी।

प्रभु नामक एक बालक एक दिन सोते—सोते अपनी माँ से बोला, मेरे घुटने में अभी तक दर्द हो रहा है। पिछले जन्म में जब मैं

हिरन था, तो एक शिकारी ने मेरे पैर में गोली मार कर मुझे घायल कर दिया था, वही दर्द अब भी हो रहा है।

ऐसे अनेक दृष्टान्त मिलते हैं, जब किसी मनुष्य ने अपने पूर्व जन्म के बारे में बताया कि वह बन्दर था, सर्प अथवा कुत्ता आदि कोई पशु था। इससे भारतीय शास्त्रों के अनुसार कर्म—सिद्धान्तों की यह बात सत्य प्रतीत होने लगती है कि आत्मा को निजी कर्मों के अनुसार चौरासी लाख कही जाने वाली योनियों में से किसी में भी जन्म लेना पड़ सकता है।

आ यो धर्माणि प्रथमः ससादं ततो वपूंषि कृणु वे पुरुणि।
धास्युर्योनिं प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदितां चिकेत।।

अथर्ववेद ५/१/१/२

जो मनुष्य पूर्वजन्म में धर्माचरण करता है, उस धर्माचरण के फल से अनेक उत्तम शरीरों को धारण करता, और अधर्मात्मा मनुष्य नीच शरीर को प्राप्त होता है। जो पूर्व जन्म में किये हुए पाप पुण्य के फलों को भोग करने के स्वभावयुक्त जीवात्मा है वह पूर्व शरीर को छोड़ के वायु के साथ रहता है, पुनः जल औषधि व प्राण आदि में प्रवेश करके वीर्य में प्रवेश करता है, तदनन्तर योनि अर्थात् गर्भाशय में स्थिर हो के पुनः जन्म लेता है। जो जीव अनुदित वाणी, अर्थात् जैसी ईश्वर ने वेदों में सत्य भाषण करने की आज्ञा दी है वैसा ही यथावत् ज्ञान के बोलता है और धर्म ही में यथावत् स्थित रहता है, वह मनुष्य योनि में उत्तम शरीर धारण करके अनेक सुखों को भोगता है। और जों अधर्माचरण करता है, वह अनेक नीच शरीर अर्थात् कीट पतंग पशु आदि के शरीर को धारण करके अनेक दुःखों को भोगता है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पुनर्जन्म

प्रश्न—"मनुष्य का जीव पश्वादि में और पाश्वादि का मनुष्य शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में जाता आता है या नहीं।"

उत्तर—"हाँ! जाता आता है।" अर्थात् स्त्री, पुरुष, पक्षी आदि सभी में जाता आता है।

सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास

परदारान्न गच्छेच्च मनसापि कथञ्चन।
किमु वाचास्थि बन्धोऽपि नास्ति तेषु व्यवायिनाम्।।

विष्णुपुराण ३/११/१२३

पर स्त्री से तो वाणी से क्या मन से भी प्रसंग न करे, क्योंकि उससे मैथुन करने वालों को अस्थि बन्धन भी नहीं होता अर्थात् उन्हें अस्थि शून्य कीटादि होना पड़ता है।

इससे भी सिद्ध होता है कि मनुष्य का पुर्नजन्म पाप कर्म करने पर सूँड़ी आदि अस्थि शून्य कीट में जन्म लेना पड़ सकता है।

चौरासी लाख कही जाने वाली योनियाँ, कर्मफल भोग के लिये, यह परमात्मा के बन्दी गृह ही हैं। जितने काल का जो दण्ड कर्म फल के अनुसार मिलना होता है, परमात्मा उसी योनि में भोगने के लिये भेज देता है।

५. अन्तः प्रेरणा

राजनारायण मुनीम जिन की प्रकृति थी जिस डाल पर बैठे उसी डाल को काट छाँट कर बराबर कर दिया। एक किवदन्ति है"भले बुरों के होत हैं, बरे भलों को होत"। मुरादाबाद में श्री राजनारायण मुनीम के सुपुत्र श्री प्रदीप कपूर सी.ए. अपने छोटे भाई का विवाह १०/५/१९९७ को कर के देहली से लौट रहे थे। कपूर साहब की कार आगे आगे चल रही थी और उसे स्वयम् ही चला रहे थे, साथ में पत्नी और दोनों बच्चे भी बैठे थे। कुछ दूर चलने के पश्चात् दोनों बच्चों ने यकायक शोर मचाया कि हम चाची के पास जायेंगे। प्रदीप कूपर ने कार रोकी और दोनों बच्चे पीछे आ रही कार

में चाची के पास जाकर बैठ गये। कारें चलने लगीं, कुछ ही दूर जाकर प्रदीप कपूर की कार एक खड़े ट्रक से जा टकराई और दोनों ही पति–पत्नि उसी क्षण वहीं पर समाप्त हो गये।

परमात्मा ने अपने सर्वान्तरयामी स्वरूप से बच्चों के मन में चाची के पास जाने की जिज्ञासा को जागृत कर दोनों बच्चों के जीवन की रक्षा की।

६. सुखदेव

मुरादाबाद मौ० जीलाल निवासी श्री मूल शंकर जी के पिता श्री सुखदेव का स्वास्थ्य अधिक बिगड़ गया, मूलशंकर जी उन्हें अक्टूबर १९९४ में विवेकानन्द अस्पताल में ले गये। वहाँ पर दो दिन रहे, परन्तु रोग में कोई सुधार नहीं हुआ। सुखदेव जी ने मूलशंकर से कहा—मुझे घर ले चलो, मैं घर की चौखट पर ही मरना चाहता हूँ। मूल शंकर जी ने चिकित्सकों से परामर्श किया और घर पर ले जाने के लिये सहमति दे दी। सुखदेव जी का शरीर बहुत निर्बल हो गया था, परन्तु घर जाने की अनुमति मिल जाने से उनके अन्दर न मालूम कहाँ से इतना बल आ गया कि उन्होंने अपने आप ही ग्लुकोश आदि की सभी नलियाँ निकाल कर फैंक दी, उठे और स्वयम् ही अपने कपड़े पहन कर चलने को तैयार हो गये। यहीं तक ही नहीं, वह अम्बुलैन्स में भी अपने आप चढ़ गये। घर पर आये, अपने आप उतर कर घर में जीने पर चढ़ गये। हंसते बोलते रहे, ऐसा लगता था कि अब इन्हें कोई रोग ही नहीं रहा हो। कहने लगे मैं रात को ९ बजे चला जाऊँगा, तुम्हें जो मालूम करना हो वह मालूम कर लो, इस समय मैं और मेरी बुद्धि सब कुछ ठीक है। सबने इस अवस्था को देखकर टाल दिया और सोचने लगे अब यह बिलकुल ही ठीक हैं। मूलशंकर अपनी दुकान पर चले गये, रात्रि को ८ बजे लौटे और पिता जी के पास पहुँचकर हाल चाल मालूम किया। सुखदेव जी ने

कहा—तुम अब आये हो ८ बजे हैं, जो कुछ भी मालूम करना हो वह मालूम कर लो। सबने हँस कर बात को टाल दिया। सुखदेव जी के पास कोई घड़ी आदि कुछ नहीं थी, उन्हें तो केवल अन्तरात्मा रूपी घड़ी ही दीख रही थी। ८:४५ पर फिर सुखदेव जी ने कहा—देखो मैं ९ बजे चला जाऊँगा, फिर कुछ मत कहना। मूलशंकर जी ने बताया ९ बजे एक दम स्वास्थ्य बिगड़ा आवाज बन्द हो गई, आँखें बन्द कर लीं, दोनों कानों की लौ घूमने लगीं नाक भी टेढ़ी हो गई और नाड़ी भी अति मन्द पड़ गई। नीचे से सब जने ऊपर आ गये, सबने कहा—कि अब इनमें कुछ नहीं रहा। छोटे भाई डा० राकेश को लेकर आया, डा० ने देखा नाड़ी किन्चित मात्र ही चल रही है। अब इनमें कुछ नहीं मालूम देता यदि आप कहें तो मैं कुछ प्रयत्न करुँ। इस पर मूलशंकर ने कहा—प्रयत्न पूरा कीजिये। इन्जैक्शन लगाये गये ग्लुकोश चढ़ने लगा, कम्पाउन्डर को छोड़ कर डाक्टर साहब चले गये। रात्रि को २ बजे आँख खोली और बोलने लगे। कहा—तुमने मुझे जमीन पर क्यों नहीं लिया और न मेरे नेत्र बन्द करें? तुमने यह ठीक नहीं किया। मूलशंकर ने कहा—पिता जी आप ठीक हैं, इन बातों का अभी समय नहीं आया था। पिता जी आपको इस बीच में क्या कोई कष्ट हुआ या कुछ देखा? सुखदेव बोले मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ, मेरे सामने एक काली भयानक आकृति आई, मैंने हाथ जोड़े, वह मुस्करा कर चली गयी। इसके पश्चात् दो वर्ष तक जीवित रहे, २८ जौलाई १९९६ को शरीरान्त हुआ।

७. शान्त वातावरण

श्री शिवचरन लाल गुलाठी ब्रास पात्र निर्यातक जिगर कालोनी, मुरादाबाद की गृह स्वामिनी श्रीमती राज गुलाठी को २८ अगस्त १९९६, श्रावणी पर्व के दिन अचेत अवस्था में विवेकानन्द अस्पताल १ बजे ले गये, डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। ४ घन्टे के पश्चात् पुनः चेतना आई और ठीक होकर घर पर आ गई। मैं साक्षात्कार के लिये श्रीमति राज गुलाठी जी से मिला और प्रश्न किया कि आपने मृत्यु के पश्चात् क्या देखा? वह बताने लगीं मैंने कुछ नहीं देखा मैं बिलकुल शान्त पड़ी रही। मैंने कहा—क्या! आपने किसी यमदूत आदि को देखा? कहा—कुछ भी नहीं था, एक दम बिलकुल शान्त वातावरण था। आगे बताया मुझे १९८३ में पहला हार्डअटैक हुआ, उस अचेत अवस्था में मैं जोर—ज़ोर से गायत्री मन्त्र का जाप करने लगी। यह दृष्य देखकर सभी चकित रह गये कि यह क्या हो रहा है। एक बार मेरे हाथ की हड्डी टूट गई, उस समय मैं देहली में थी, अचेत अवस्था में मुझे सरगंगाराम अस्पताल में ले जाया गया, वहाँ पर भी मैं अचेत अवस्था में जोर—जोर से गयत्री मन्त्र का उच्चारण करने लगी थी। मैंने कहा—आपने दोनों बार गायत्री मन्त्र का ही उच्चारण क्यों किया था? उत्तर में बताया कि मैंने गायत्री मन्त्र का जाप नहीं किया वह तो स्वमेव ही होने लगा था। मैंने कहा—ऐसा क्यों हुआ? इस पर श्रीमती राज गुलाठी जी ने उत्तर दिया कि मैं नित्य सन्ध्या, यज्ञ और गायत्री मन्त्र का जाप करती हूँ, हो सकता है, इसी कारण से अचेत अवस्था में भी गायत्री मन्त्र का जाप होने लगा हो। मैंने कहा—आपको यमदूत आदि क्यों नहीं दीखें? राज गुलाठी ने कहा—यह सब कल्पनातीत की ही बातें हैं, इसमें वास्तविकता कुछ नहीं। जैसा जिसने सुना होता है, वैसा ही मस्तिष्क में बैठ जाता है और वही स्वप्नवत रूप में दीखने लगता है।

८. चिर निद्रा

श्री रामकिशन दास जी कट्ठिया मुरादाबाद मण्डी चौक सर्राफा बाजार के एक प्रसिद्ध आभूषणों के विक्रता थे। शिक्षा शून्य थी, परन्तु समय के अनुसार उर्दू भाषा को भली प्रकार पढ़ लेते थे। हिन्दी नहीं जानते थे, पर समझ लेते थे। वृद्धावस्था के कारण शरीर अधिक निर्बल हो गया था, घर पर ही लेटे रहते थे। जीवन यात्रा समाप्ति की ओर बढ़ती चली जा रही थी, ऐसा लगता था कि अब समय निकट आ गया हो। अपने सुपुत्र श्री राधेलाल जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी की धर्म पत्नि श्रीमति चन्द्रकान्ता उनके पास बैठ कर गीता का पाठ कर रहीं थीं, उसे बीच में ही रोक दिया। पाठ की ध्वनि कानों में न आने पर उन्होंने अपने पौत्र रम्मन से कहा—भावज से कहो अध्याय पूरा करें। अध्याय का पाठ पुनः होने लगा लाला जी शान्त मुद्रा से सुनते रहे, हिन्दी न जानते हुए भी उस समय उस पवित्र आत्मा को गीता के पाठ का पूर्ण आनन्द प्राप्त हो रहा था, अध्याय का पाठ पूरा होते ही शरीरान्त भी हो गया। न कोई घबराहट है, न बेचैनी, न कोई चिन्ता, न कोई भय, न कोई कष्ट वेदना आदि कुछ नहीं था, शान्त स्वभाव से चिर निद्रा में सुख की नींद सो गये।

सर्राफा बाजार में श्री विष्णु स्वरूप सिंहल चौराहागली में बर्तन का व्यापार करते हैं उन के पिता श्री वह बहुत बीमार चल रहे थे। अचानक उन्होंने कहा अभी ८ बजे या नहीं, इसे सुनकर सब चकित थे, वह ठीक ८ बजे बिना किसी कष्ट के स्वर्ग सिधार गये।

९. गजरौला की बालिका पूर्व जन्म में लड़का थी

अमर उजाला १४ दिसम्बर २०००। नगर के पब्लिक स्कूल में कक्षा तीन में शिक्षा ग्रहण कर रही बालिका को अपने पूर्व जन्म के माता–पिता की तलाश है, लेकिन जनपद का नाम न बता पाने के कारण उनके गाँव का पता नहीं चल रहा है।

जानकारी के अनुसार नगर के मुहल्ला तिगरिया भूड़ निवासी मुकुट लाल शर्मा के घर अब से नौ वर्ष पूर्व एक कन्या का जन्म हुआ था। बड़ी होने पर इसका नाम बबीता रखा गया। बड़ी हाने पर उसे अपने पूर्व जन्म की बातें याद आने लगीं। लेकिन अपने दो भाइयों व चार बहनों में सबसे छोटी होने की वजह से उसके पिता व माता रामदुलारी ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। धीरे–धीरे उसके पूर्वजन्म की बात पूरे मुहल्ले में फैल गई। इस समय वह बालिका नगर के जनता पब्लिक स्कूल में कक्षा तीन की छात्रा है।

इस नौ वर्षीय बालिका ने अपने पूर्व जन्म की याद करते हुए बताया कि उसके पूर्व जन्म का नाम अजीत सिंह था और वह अपने पिता सोतम सिंह के साथ पैसलपुर में रहता था। उसके ताऊ का नाम केहर सिंह, बड़े भाई रामपाल, सोमपाल, छोटा भाई सुनील तथा बहन आशा है।

एक दिन खाना देते समय उसकी अपनी बहन से नोक झोक हो गई, उस समय पास में ही दुनाली बन्दूक रखी हुई थी। बहन–भाईयों में छीना झपटी के दौरान अचानक बन्दूक का ट्रेगर दब गया और गोली आशा के सीने पर लग गई जिससे तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। बाद में उसको पुलिस पकड़ कर ले गई। पुलिस ने उसको जेल में बन्द कर दिया। जेल में बन्द रहने से उसको डर लगने लगा तथा डर की वजह से १६ वर्ष की आयु में जेल में ही उसकी मृत्यु हो गई।

अपनी धुंधली याददाशत के सहारे बबिता ने बताया कि वह अपने पूर्वजन्म की बातें धीरे–धीरे भूलती जा रही है। उसे अपने

पूर्वजन्म के गाँव का नाम तो याद है, लेकिन वह गाँव किस प्रान्त व जनपद में है, इसका उसे पता नहीं है। पूर्वजन्म की जाति जाट होने के कारण उसको इतना तो यकीन है कि उसका गाँव उत्तर प्रदेश या हरियाणा में होगा। बबीता अपने पूर्वजन्म के माता–पिता व भाईयों को देखने के लिये काफी व्याकुल व व्याग्र है लेकिन गाँव पैसलपुर का सही पता न होने की कसक उसके मासूम चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही है।

१८. पुनर्जन्म : विद्या देवी को मिला नाग रूपी बेटा

दैनिक जागरण ९/२/७

भटपुरा (बदायूँ) एक माँ नाग को अपना बेटा मानती है। उसका मानना है कि यह उसके बेटे का पुनर्जन्म हुआ है। इसलिये वह उसे अपने सीने से लगाकर सोती है। एक पल भी नजरों से ओझल नहीं होने देती है।

बिसौली विकासखण्ड के गाँव अड्डूपुरा में श्यामलाल जाटव के तीन पुत्र अनोखे लाल, नेम सिंह और चौब सिंह और पुत्री सुनीता देवी है। सबसे छोटे पुत्र १६ वर्षीय चोब सिंह की आठ वर्ष पूर्व शिवरात्रि के दिन मौत हो गई थी।

माँ विद्या देवी का वह सबसे लाड़ला था। बेटे की अचानक हुई मौत से विद्यादेवी अर्द्धविक्षिप्त सी हो गई। विद्या देवी ने बताया कि १४ जनवरी २००७ को सपने में चोब सिंह ने कहा कि माँ दुःखी मत हो, मैं अब तुझसे मिलने आ रहा हूँ। मुझे दुबारा मत मरने देना, क्योंकि नाग के रूप में घर आ रहा हूँ। नाग को देख लोग मुझे कहीं मार न डालें। इसके बाद नींद खुल गई और सपना टूट गया। विद्या देवी भी भूल गई सपना। १५ जनवरी को सुबह करीब आठ बजे दरवाजे पर एक काला नाग फन फैलाये बैठा दीखा। नाग को देख

विद्या देवी डरकर चिल्ल उठी। उधर पड़ोस के लोगों ने लाठी डण्डों से नाग पर जैसे ही प्रहार शुरु किया, विद्या देवी को सपने की बातें याद आ गई। उसने सबसे हाथ जोड़कर विनती की कि इसे मत मारो, यह मेरा बेटा है। गाँव के लोगों को तो यकीन ही नहीं हुआ। बोले अगर तेरा बेटा है तो गोदी में उठा ले। विद्या देवी ने जब नाग को गोदी में बैठने को कहा तो वह फन दबाकर गोदी में जा बैठा। विद्या देवी ने जब उसे सीने से लगाया तो लोग यह नजारा देख भौंचक्के रह गये।

इसी बीच नेम सिंह वहाँ पहुँचा और नाग से बोला तू अगर मेरा भाई है तो वहाँ चल जहाँ दिन भर जाकर बैठा रहता है। यह सुन नाग लालता प्रसाद की परचूनी की दुकान पर जा पहुँचा। यहीं चौब सिंह ज्यादातर बैठता था। गाँव के लोगों को भी यकीन हो चला कि यह चौब सिंह ही हैं।

विद्या देवी अपने लाड़ले को अपनी नजरों से कभी दूर नहीं होने देती है। माँ अपने पास ही उसे सुलाती है। घर का कामकाज करते वक्त उसे घर के सामने पेड़ छप्पर में रख देती है। नाग ने आज तक किसी पर वार नहीं किया और अपने पुराने घर में सुकून से जिन्दगी जी रहा है।

११. अर्थी निकलने से पूर्व जी उठी महिला

जागरण टीम, लुधियाना

शिमलापुरी गली नम्बर २ में रविवार को उस समय अजीबोगरीब स्थिति उत्पन्न हो गई, जब संस्कार के लिये घर से अर्थी निकाले जाने से पूर्व संतोष रानी (५०) नामक महिला उठ कर बैठ गई। अब वह पहले की तरह सामान्य है और परिवार वालों से बातें भी कर रही है। उसे देखने वालों का उसके घर पर ताँता लगा हुआ

है। सन्तोष रानी ने ऐसी कई बातें बताई जो आमतौर से सुनी जाती रही हैं। सन्तोषरानी के भाई मदनलाल ने बताया कि शनिवार की रात सन्तोष रानी खाना खाने के बाद सो गई। रविवार की सुबह उसकी सांसें चलनी बन्द हो गईं। इलाके के एक डाक्टर को बुलाया गया। उसने उसे मृत बताया। इसके बाद घर में रोने—धोने का दौर शुरु हो गया। परिवार वालों ने उसे बिस्तर से उतार कर नीचे लिटा दिया। सिर के पास दिये जला कर परिजन उसकी अन्तिम संस्कार की तैयारी में जुट गये। रिश्तेदार घर में जुड़ने लगे थे। घर से अर्थी निकाले जाने की तैयारी चल रही थी कि दोपहर लगभग ढाई बजे वह उठ कर बैठ गई। बैठने के बाद उसने अपनें परिजनों से पूछा, वे लोग रो क्यों रहे हैं? सबको चुप करवाया और फिर परिजनों के साथ खाना खाया। इसके बाद सन्तोष रानी ने परिवार वालों को बताया कि रात में उसने नींद में सीवे (शमशान में जलता दिया) देखा था।

उस समय सफेद कपड़े में वहाँ कोई बुजुर्ग खड़ा था। सन्तोष रानी के अनुसार वर्षों पूर्व मरी उसकी माँ व सास उसे अपने साथ लेने आई थी। वह जाने को तैयार हो गई थीं। इसके बाद क्या हुआ उसे कुछ नहीं पता।

१२. मृत्यु से वापसी

श्री ओम प्रकाश जी ने बताया कि हमारे घर पर एक महिला अधेड़ आयु की चौका बासन करने आती थी, उसका नाम रामकली था। एक दिन उसने बताया कि मैं मर कर भगवान जी के पास चली गई थी। उसने बताया कि मैंने देखा एक व्यक्ति हिसाब किताब देख रहा था, उसने कहा—यह दूसरी रामकली है, इसे वापिस भेजो और मेरी पीठ पर एक गरम खौंचा मारा, मैं चीख के साथ उठ बैठी। वह अपनी पीठ पर खौंचे के निशान भी दिखलाती थी। एक और

रामकली थी वह उसे उठाकर ले गये। पता चला जाड़े से बचने के लिये वह अपनी खाट के नीचे आग जला कर रख लेती थी।

मैं व्यापारिक कार्य से देहली जा रहा था। उसी डब्बे में मेरे पास श्री अरविन्द कुमार जी बैठे हुए थे। उन्होंने अपने बैग में से एक अंग्रेजी की पुस्तक निकाल कर पढ़ने लगे। पुस्तक २००—२५० पृष्ठ की थी। गाड़ी के कुछ दूर चले जाने के पश्चात् उन्हें कुछ हँसी सी आई। मैंने कहा—क्या पुस्तक है? उन्होंने हिन्दी में बताया कि इसका विषय है मृत्यु के बाद क्या क्या होता है। मैं इसे कई बार पढ़ चुका हूँ। मैंने कहा—हँसी क्यों आई? उत्तर दिया कि घटना कुछ ऐसी ही है। मैंने कहा—क्या घटना है? बताने लगे कि एक व्यक्ति को यमदूत पकड़ कर ले गये। वह उसे लेकर इन्द्र के दरबार में पहुँचे, महाराज इन्द्र ने कहा—इसे क्यों ले आये इसे वापिस भेजो, वह दूसरा व्यक्ति है, उसे लेकर आओ, और उसकी पीठ पर लोहे की बार से मार कर कहा—चल हट यहाँ से और वह जीवित हो गया। और उसकी पीठ पर चोट का निशान भी बन गया। कहने लगे कैसी न्याय व्यवस्था है कि दोष रहित देख कर उसे मुक्त कर दिया।

मैंने कहा—यहाँ मेरे मन में दो शंकायें उठ रही हैं। श्री अरविन्द कुमार जी ने कहा—क्या? मैंने कहा—क्या भगवान के दरबारियों से भी भूल हो जाती हैं? इस पर वह एक दम सन्न रह गये और कहा—आपकी बात में दम है। क्या जिस भगवान ने इतने बड़े ब्रह्माण्ड को रचा है और सहस्त्रों ब्रह्माण्डों की रचा की है जो सबको धारण किये हुए है, जो सबका पालन करता है, जो सबके साथ न्याय करता है। उसके यहाँ कैसे भूल हो सकती है। आपकी बात सही है और विचार करने योग्य है। दूसरी शंका क्यों है? मैंने कहा—उसका शरीर यहाँ पड़ा था, केवल यमदूत आत्मा को ही निकाल कर ले गये थे और शरीर यहीं पर ही पड़ा रह गया था, तो लोहे की बार से कौन सी पीठ पर वार हुआ था, जो यहाँ पड़े हुए शरीर पर चोट का निशान बन गया।

मैंने इससे पूर्व की घटना रामकली की बताई। इस पर वह अत्यन्त विस्मय रूप गहन चिन्तन में गोते लगाने लगे।

१३. पुनर्जन्म के भाइयों को देखकर भर आई आंखें

हसनपुर—पाँच साल के प्रशान्त ने दूर से ही अपने पिछले जन्म के माता—पिता को देखकर पहचान लिया। भाइयों को देखकर उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसके पिछले जन्म की यादों को सभी के समक्ष बताने से लोगों में उत्सुकता बनी हुई है। प्रशान्त का पिछले जन्म में जसवन्त नाम था और ट्रैक्टर से हुए एक हादसे के बाद उसकी मौत हो गई थी। जन्म के दो वर्ष के बाद से ही वह कुछ न कुछ पुरानी बातें करता रहता था। पहले तो माँ—बाप ने ध्यान नहीं दिया, जब चर्चा घर के बाहर पहुँची तो आसपास के लोग भी उससे पूछताछ करने लगे। प्रशान्त के पिता ने पिछले जन्म वाले पते पर संपर्क किया तो बातें सही निकलीं। ब्लाक क्षेत्र के गाँव गंगाचोली निवासी सतपाल सिंह के घर में अब से पाँच साल पहले एक पुत्र ने जन्म लिया। जिसका नाम प्रशान्त रखा गया।

अब से दो वर्ष पूर्व बालक ने घर में कहना शुरु कर दिया कि उसके पिता नेता है।

१४. पिता ने मेरी हत्या कर दी

'आज' साप्ताहिक विशेषांक ८ अप्रैल २००१ आत्मा जब शरीर के बन्धन से मुक्त होती है तो उसके लिये समय तथा स्नान के भी बन्धन टूट जाते हैं। आत्मा न ईसाई है, न हिन्दू, न मुसलमान, वह विशुद्ध रूप से उस परम सत्ता का अंश है और अपने कर्म तथा संस्कारों के अनुसार कहीं भी शरीर प्राप्त कर सकती है।

रादर फील्ड स्ट्रीट, लन्दन में रहने वाली एक मछुवारे की लड़की जिसकी उसके पिता ने ही गला घोट कर हत्या कर दी थी, उसने भारत में श्री पी.पी.झा. के यहाँ पुनर्जन्म पाया। बालिका का नाम रखा गया 'विनीता'।

विनीता ने अपने पूवर्जन्म के विषय में ढ़ाई वर्ष की आयु में ही बताना प्रारम्भ कर दिया था। वह अपने आपको परिवार से अलग समझती और अपनी बातों में लन्दन का जिक्र करती थी। उसने बताया, मैं लन्दन की रहने वाली थी और मेरा पिता लन्दन में मछुवारा था, मेरे पिता का नाम गार्टन था, वह शराब बहुत पिता था, वह घर वालों के साथ नशे में झगड़ा करता और मारता—पीटता था। एक दिन वह शराब के नशे में घर आया, उसने शराब बहुत पी रखी थी। उसने नशे की हालत में मुझे बहुत पीटा और मेरा गला घोट कर मार डाला। उस समय आधी रात बीत चुकी थी, मैंने अपने शरीर को फर्श पर पड़े देखा और फिर मेरे पिता ने मेरे शरीर को घसीट कर मेन होल में फेंक दिया था। वह सब बताते हुए वह भय के मारे अपनी माँ रेवती की गोद में सिमट जाती, उसकी आँखों से आँसू बहते और फिर वह सुबक—सुबक कर रोने लगती।

पी.पी.झा. के एक मित्र लन्दन में रहते थे, उन्होंने विनीता द्वारा बताया गया लन्दन का पता उन्हें लिखकर भेजा और निवेदन किया कि वह उस पते पर जाकर मछुवारे को ढूंढने का प्रयास करें। उनके मित्र ने सड़क का पता तो लगा लिया जिसका नाम विनीता बताती थी पर उस मछुवारे को ढूँढ नहीं सके। रादरफील्ड में कुछ मछुवारे अवश्य रहते थे या तो वह मछुवारे जिसका नाम विनीता ने गार्टन बताया था वह स्थान छोड़ कर जा चुका था या हो सकता है उसकी मृत्यु हो गई थी अथवा वह वही था परन्तु उस बस्ती में कोई भी बताना नहीं चाहता था। क्योंकि यह एक हत्या का मामला था और गार्टन को सजा हो सकती थी, उसने अपनी लड़की का गला घोटकर मेन होल में फेंक दिया था। वहाँ इस प्रकार की घटनायें होती

रहती हैं। उनसे लोगों ने मना किया कि वह इस प्रकार पूछताछ वहाँ न करे। विनीता के पिता का कहना था कि उसने यह बात सबसे पहले उस समय बताई जब वह तीन वर्ष की थी।

विनीता घर से बाहर जाते में भी डरती थी। उसे डर था कि कहीं कोई गोरी चमड़ी वाला उसका गला न घोट दे। १५ वर्ष की आयु में नींद में अंग्रेजी बोल ने की आदत उस समय भी बनी हुई थी, वह हिन्दी में बात करती थी, उसे अंग्रेजी ज्ञान न था। उसने अपनी माँ को बताया कि उसने सपने में तीन बार अपना पिछला जन्म देखा थां, अगर उसे रादरफील्ड ले जाया जाये तो वह अपना घर तथा अपने हत्यारे पिता को पहचान लेगी।

स्वप्न विज्ञान की रोचक घटनायें

१. आचार्य भगवत सहाय शर्मा जी ने एक दिन अपने जीवन की दुःखंद घटना सुनाई। आचार्य जी ने बताया हमारे परिवार में एक पुत्र का जन्म हुआ, मैं और मेरी पत्नी अति प्रसन्न थे। अचानक; कुछ समय के पश्चात् मेरी पत्नी और पुत्र दोनों ही रोग ग्रस्त हो गये। चिकित्सा होती रही, घर का काम धन्धा भी स्वयं ही करता रहा। इसी चिन्ता में था कि इस विपत्ति से मुक्ति कैसे मिले। एक दिन रात्रि को स्वप्न में किसी ने कहा, इन दोनों में से एक ही बच सकता है—बता किसे चाहता है? इस पर सहसा मेरे मुख से निकल पड़ा कि पत्नी बची रहेगी तो पुत्र और भी हो सकता है। मैं एक दम भड़भड़ा कर उठा और सोचने लगा, यह क्या हुआ। जो होना था वह अनयास ही हो गया। पत्नी का स्वास्थ्य ठीक होने लगा और पुत्र सदैव के लिये छिन गया। तब से अब तक किसी भी पुत्र का जन्म नहीं हुआ।

२. प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेद सदन अबोहर—यह आवश्यक नहीं कि स्वप्न सत्य निकले। स्वप्न तो स्वप्न ही होता है। जागृत में घटित होने वाली घटनायें तो प्रत्यक्ष सामने होती हैं, फिर भी हम

संसार में देखते हैं कि कई बार कई स्वप्न आश्चर्य जनक ढंग से सत्य सिद्ध होते हैं। इसके करणों का विवेचन यहाँ नहीं करना। यह एक अलग विषय है। मैं आज इसके सम्बन्ध में कुछ अपने और कुछ दूसरों के कुछ ऐसे विचित्र स्वप्नों को संक्षेप से रखता हूँ।

कुछ लोग यह भी कहेंगे कि दूरस्थ बैठे व्यक्ति को सोये–सोये दूर घटित हो रही घटना का कैसे पता चल जाता है। ये सब विचारों की तरंगों व मन के तीव्र भावों व घनिष्ठ सम्बन्धों का ही एक चमत्कार होता है। ऐसा भी होता है कि घटना घटित होने से पहले ही किसी को उसका आभास हो जाता है। घटना घटी नहीं, पहले ही कैसे आभास हो गया? हम कई बार बच्चों को कहते हैं कि ऐसा न करो, गिर जाओगे, चोट लगेगी। वे नहीं मानते गिरते हैं, चोटें लगती हैं। वृक्ष गिरेगा या दीवार गिरेगी ऐसा अनुमान सत्य सिद्ध होता है। यह क्या है? आभास ही तो है।

एक—गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामदेव जी अफ्रीका गये। उनका दामाद यहाँ चल बसा। उन्हें वहाँ स्वप्न में पता चल गया। यह घटना उनके सब मित्रों को ज्ञात है।

दो—श्री पं. .शान्ति प्रकाश जी को स्वप्न आया कि पं० चमुपति जी चल बसे हैं। वह अपना प्रचार छोड़ कर बीच में ही लौट आये। स्वप्न सत्य सिद्ध हुआ।

तीन—पं० शान्ति प्रकाश जी प्रचारार्थ भ्रमण पर थे। पीछे पत्नी चल बसी। उन्हें वहीं स्वप्न में पता चल गया। वह लौट आये।

चार—पं० शान्तिं प्रकाश जी कारागार में थे। एक केस चल रहा था। स्वप्न आया कि मैं हाईकोर्ट से मुक्त किया गया हूँ और यह स्वप्न सत्य निकला।

पाँच—कुछ वर्ष पूर्व ब्रह्मचारी श्री पाल जी शास्त्री एम.ए. से मेरी आत्मीयता हो गई। आज वह आर्य समाज में एक जाने पहचाने युवक कार्यकर्त्ता हैं। मैं उनके जीवन निर्माण में आत्मीय भाव से कई वर्षों से रुचि ले रहा हूँ। कुछ समय पूर्व एक घटना विशेष के कारण

श्री पाल जी को एक मानसिक कष्ट हुआ। मुझे स्वप्न आया कि उन्हें बहुत दु:ख है और वह दु:ख से बहुत व्याकुल हैं। मैंने तत्काल उठकर रात्रि २ बजकर दस मिनट पर डायरी में यह लिखा है कि श्री पाल जी बहुत विहव्ल व्याकुल हैं उनकी सारी मन: स्थिति डायरी में लिख दी।

जाकर सम्पर्क किया। पता किया कि क्या—क्या बीता है। मैंने उनके आगे डायरी रख दी, जिसे पढ़कर सब दंग रह गये कि दो बजे घटी घटना का ठीक—ठीक वृतान्त दो बजकर दस मिनट पर लिख दिया। मन के दूर दर्शन पर ऐसा स्पष्ट चित्र सैंकडों किलो मीटर की दूरी से लिया गया।

छ:—मैं महारांष्ट्र में था। लौटकर गुरुकुल गौतम नगर में पूछा कि श्रीपाल जी के घर में क्या हाल है? प्रिय अजय जी शास्त्री एम०ए० ने कहा—सब ठीक है, मैंने पूछा श्री पाल जी के पिता जी क्या ठीक हैं? उन्होंने कहा ठीक है।

कुछ समय के बाद श्रीपाल आए तो पता चला कि उनके पिता जी को एक साँड ने खूब मारा है। बहुत चोटें लगी हैं। वह चारपाई पर पड़े हैं। ठीक होने में कई मास लगे।

सात—मेरी बड़ी पुत्री प्रतिमा मुम्बई रहती है। उसे अपनी छोटी बहिन रश्मि के बारे में एक स्वप्न आया। वह खूब रोई। अपने पति को स्वप्न बताया। मैं क्या लिखूँ कि जो कुछ उसने स्वप्न में देखा वह सब ठीक था।

३— मैं परमेश्रीदास के मकान में किराये पर था। २६ जून १९८३ को पुत्री इन्दिरा का विवाह कर दिया। विवाह के पश्चात् ही परमेश्रीदास ने घर में लगे हत्ती के नल से पानी भरना बन्द कर दिया, बिजली काट दी, और शौचालय में भी ताला डाल दिया। शौच और स्नान के लिये प्रात: पहले पत्नी राजोगली छोटे भाई के घर जातीं और जब वह निबट कर आतीं तो मैं जाता था। छोटे भाई और उनकी पत्नी का इस संकट काल में बहुत बड़ा सहयोग रहा।

एक दिन रात्रि को वर्षा अधिक होने लगी, परमेश्री के पुत्र सुरेश ने जीने की कुण्डी लगा दी, शौच को जाने का मार्ग बन्द कर

दिया। बराबर में जैन साहब के घर से होकर जाना पड़ा, श्री रामअवतार जी रम्मन बाबू के सहयोग से जीने की कुण्डी खुल गई। उसी रात इस भयंकर संकट को देखकर मन बड़ा दुःखी हुआ और प्रभु से प्रार्थना करी कि हे प्रभु जी! अब इन सभी संकटों को एक साथ दूर करा दो। उसी रात स्वप्न में एक वेद मन्त्र सामने आया। मैं नित्य की भाँति प्रातः यज्ञ करने लगा उसी समय ध्यान आया कि रात एक मन्त्र स्वप्न में आया था। दुकान पर आकर वेद में से मन्त्र निकाला मन्त्र था। यजुर्वेद का २/२० लिखकर याद किया इससे पहले मैंने कभी इस मन्त्र को नहीं देखा था और अगले दिन से ही गायत्री जाप के साथ उसका भी जाप शुरु कर दिया। परिणाम स्वरूप एक सप्ताह में ही श्री वीरकान्त जी के द्वारा मकान की व्यवस्था हो गई और मैं प्रभु कृपा से १९८६ में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन मकान छोड़ कर अपने स्थायी आवास में चला आया।

अनेक भ्रान्तियाँ

जीवात्माओं में लिंग भेद नहीं

एक बार आर्य समाज मण्डी बाँस मुरादाबाद के साप्ताहिक सत्संग में राजकीय इण्टर कालेज के प्रोफेसर डा० आर्येन्द्र जी ने बोलते हुए कहा—'कि मुझे ऐसा लगता है कि जीवात्माओं में भी स्त्री लिंग और पुल्लिंग होते हैं। पुल्लिंग जीवात्मा किसी भी योनि में जाय वह पुल्लिंग ही रहेगा और स्त्री लिंग स्त्री ही रहेगा। उसके पश्चात् मुझे मंच पर बुलाया गया, मैंने बहुत से तर्क देते हुए कहा कि यह भ्रम है जीवात्माओं में कोई लिंग भेद नहीं होता, इसमें कोई भी वास्तविकता नहीं। स्त्री लिंग पुल्लिंग शरीर के धारण करने पर ही होता है, जीवात्माओं में नहीं। यदि यह बात सही मानी जाय तो मनुजी महाराज ने जो युग्म अयुग्म रात्रि का भेद गर्भाधान संस्कार की प्रक्रिया में लिखा है तो क्या वह गलत है? कुछ का तो इससे भी आगे बढ़कर एक विचित्र कथन है कि मनुष्य मर कर जब पुनः जन्म

लेगा तो वह मनुष्य ही बनेगा। अन्य और जीव जन्तु भी मर कर पुनः जन्म लेने पर उसी योनि में ही जन्म लेगा। जब मनुष्य मर कर पुनः जन्म लेने पर मनुष्य ही बनेगा तो यह उपासना, पूजा, पाठ, स्वाध्याय मनन ईश्वर में आस्था, शुभकर्म करने की प्रेरणा आदि यह सब कुछ व्यर्थ है, इनके करने से क्या होगा? जब हमें मनुष्य बनना ही है तो इन सब बातों की क्या कीमत रह गई। हमें तो बिना इन पर ध्यान दिये पुनः मनुष्य जन्म मिल ही जायगा। इस शंका का हमारे पास क्या कोई उत्तर है? वास्तव में यह दोनों धारणायें बिलकुल ही गलत हैं। परमात्मा न्यायकारी है, मनुष्य को छोड़कर शेष सभी योनियाँ परमात्मा के बन्दीगृह ही हैं। जिनमें कर्मानुसार फल भोगने के लिये भेज दिया जाता है।

त्वं स्त्री त्वं पुमानसिं त्वं कुमार उत वा कुमारी।
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसिविश्वतो मुखः।।
अथर्ववेद १०/८/२७

हे जींवात्मा! तू स्त्री, तू पुरुष, तू कुमार अथवा कुमारी है। तू स्तुति किया गया होकर दण्ड से चलता है, तू सब ओर से मुख वाला प्रसिद्ध होता है।

अगले मन्त्र में कहा—एक ही देव सर्वव्यापक परमेश्वर ज्ञान में प्रविष्ट होकर सबसे पहले प्रसिद्ध हुआ, वही गर्भ के भीतर भी गर्भित बालक के अन्तः करण में विद्यमान है।

इस प्रकार परमेश्वर की सर्वव्यापकता और जीवात्माओं में स्त्री लिंग और पुल्लिंग का न होना अर्थात् जीवात्माओं में लिंग भेद का न होना सिद्ध हो जाता है।

सत्यांर्थ प्रकाश नवम् समुल्लास प्रश्न —"मनुष्य का जीवं पश्वदि में और पाश्वादि का मनुष्य शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में जाता आता है या नहीं"

उत्तर— "हाँ! जाता आता है।"

इस प्रकार सिद्ध है कि आत्मा—स्त्री, पुरुष और कही जाने वाली चौरासी लाख योनियों में, परमात्मा की कर्म फल व्यवस्था के अनुसार सबमें ही जाता और वापिस आता है। घटनायें सब प्रमाणित हैं, इनसे भी यही सिद्ध होता है।

मृत्यु समय कोई कष्ट नहीं

कुछ का मानना और कहना है कि जब जीवात्मा शरीर को त्याग कर जाता है तो उस समय इतना अधिक कष्ट होता है कि जिस प्रकार एक सहस्त्र बिच्छुओं का एक साथ डंक मारने के समान भयंकर कष्ट होता है। उतना जीवात्मा के शरीर से निकलते समय होता है।

आप घटना ६,७,८ का अवलोकन कीजिये। इससे सारे भ्रम नष्ट हो जायेंगे। मृत्यु समय पर कोई कष्ट नहीं होता, बुद्धि शान्त और मन प्रसन्न होता है, न कोई यमदूत आता है और न कोई इन्द्र दूत आता है।

देखो ऋषिवर दयानन्द जी महाराज के मृत्यु समय की घटना—वह प्रसन्न चित्त मृत्यु का अलिंगन कर चले गये। यह दृष्य देखकर नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गये।

मरने के पश्चात् क्यों वापिस आ जाता है

वास्तव में मृत्यु के पश्चात् कोई वापिस नहीं आता। हाँ! अत्यन्त गाढ़ निद्रा में पहुँच जाने पर व्यक्ति मृत्यु के समान हो जाता है, मूर्छा में आ जाने पर अथवा कोंमा में आ जाने पर भी मृत्युवत हो जाता है। ऐसी अवस्था में जब वह सचेत होता है तो जो उसने सुना था, देखा था अथवा पढ़ा था वही सब कुछ उसे दीखने लगता है। जैसे कोई इस अवस्था में मुसलमान आता है तो उसे अपने मत के अनुसार सातवें आसमान पर बैठे अल्लाह को देखता है। ईसाई चौथे आसमान पर बैठे खुदा को देखता है, इसी प्रकार हिन्दू धर्म राज इन्द्र के दरबार को देखता है। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि क्या यह सब कुछ आसमान में हैं? नहीं! ऐसा कुछ नहीं है। आकाश तो केवल एक खाली स्थान है, उसी में समस्त भूमण्डल भ्रमण करते हैं। न सात आसमान हैं न चार आसमान हैं। फिर प्रश्न उठता है तो यह सब कुछ

क्यों दीखता है? इसका यही एक सीधा समाधान है, कि जिसने जिस मत के अनुसार ग्रन्थों में पढ़ा था कथाओं में सुना था अथवा चित्रों के द्वारा देखा था, उसमें गहरी आस्था बनी हुई थी। उस पर विश्वास था, उसे सही मान कर स्वीकार किया गया था। वही सब कुछ उसी के अनुसार उसे स्वप्न रूप बन कर दीखने लगता है। वास्तव में है कुछ नहीं, ना ही कुछ हो सकता है। यही बात विज्ञान सम्मत भी है।

घटना १२ में अंकित रामकली की जो घटना आई है, उससे स्पष्ट है कि रामकली मरी नहीं थी, वह अत्यन्त गाढ़ निद्रा में आ गई थी। कथाओं में प्रसंगों के सुने अनुसार वह स्वप्न लोक में पहुंच गई। जाड़ों का मौसम है खाट के नीचे आग जला कर रखी है, उसी की तीव्रता हो जाने से उसकी पीठ पर खाट के बाँदों की गर्मी से कुछ छालों के चिन्ह बन गये। यही अवस्था लोहे की बार की है। अवलोकन कीजिये घटना ११,१२ उसमें विशेष चर्चा है।

एक शिकारी जंगल में शिकार खेलने गया, साथ में उसका १५ वर्षीय पुत्र और एक शिकारी कुत्ता भी गया। शिकार गाह में जाकर टिके, बच्चा सो गया, कुत्ता बच्चे की रक्षा हेतु जंगल को शिकारी के साथ नहीं गया। शिकारी ही स्वयं अकेला शिकार के लिये गया। लौटकर आने पर उसने पुत्र को जगाया, वह नहीं जागा, बहुत झक झोरा परन्तु वह नहीं उठा। उसे भ्रम हो गया कि कुत्ते ने मेरे बच्चे को मार दिया, कुत्ते को देखा तो उसका मुँह और पंजे रक्त से लाल हो रहे थे। उसे एक दम क्रोध चढ़ गया और उसने बन्दूक में गोली डालकर कुत्ते के मार दी। बन्दूक की आवाज सुनकर बच्चा उठ बैठा, उसने देखा चारपाई के नीचे एक जंगली जानवर मरा पड़ा है। कुत्ता उसी को देखकर जंगल नहीं गया था, कहीं यह जंगली जानवर बच्चे पर आक्रमण न कर दे, उसी को कुत्ते ने मार दिया था। गाढ़ निद्रा में व्यक्ति बिलकुल मृतवंत ही हो जाता है। यहाँ तक हो जाता है कि उसकी नाड़ी और हृदय की गति भी मन्द पड़ जाती है जिसे देखकर डाक्टर भी मृत घोषित कर देता है।

एक व्यक्ति 'द्वै' लैंगिक हो सकता है?

हमारा प्रश्न है, क्या एक व्यक्ति 'द्वै' लैंगिक हो सकता हैं? आप उत्तर दें या न दें, एक व्यक्ति 'द्वै' लैंगिक नहीं हो सकता। ज़ब एक व्यक्ति 'द्वै' लैंगिक नहीं हो सकता तो यह नित्य पढ़ा जाने वाला छन्द बिलकुल ही गलत है—'त्वमेवमाता च पिता त्वमेव' वही माता वही पिता कैसे हो सकता है? हाँ! हमारा उत्तर है कि वह हो सकता है। वेद मन्त्र भी कहता है—

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो
वभूविथ। अधाते सुमनमीमहे।।

ऋग्वेद ८/९८/११

हे सबके पिता, सबके बसाने हारे, सर्वव्यापक! हे अपरिमित ज्ञान, कर्मों वाले! तू निश्चय से हमारा पिता और तू ही हमारी माता है। इसी कारण हम तेरे से सुख की याचना करते हैं।

स्पष्ट है लिंग भेद शरीर में होता है, परमात्मा और आत्मा में नहीं। परमात्मा और आत्मा शरीर रहित हैं, इस कारण उसमें लिंग भेद ही नहीं। इसीलिये वह 'द्वै' लैंगिक संज्ञक है। क्यों? क्योंकि आत्मा शरीर धारण करके लिंग भेद की कोटि में आ जाता है, परन्तु वह शरीर और आत्मा के मिलन से इंस कोटि में स्वयं नहीं आता है। परमात्मा शरीर धारण नहीं करता, न अवतार लेता है, न जन्म मरण के चक्र में है, वह अजन्मा है, निराकार है, इसी कारण वह 'द्वै' लैंगिक है, क्योंकि उसी ने हमें जन्म दिया अर्थात् वह 'जन्म दाता माता रूप है, उसनें हमारा पालन किया अर्थात् वह पालन करता पिता रूप है।

मृत्यु क्या है?

शरीर और आत्मा के मिलन को जन्म अथवा जीवन कहते हैं। शरीर और आत्मा के सम्बन्ध विच्छेद को अर्थात् अलग–अलग हो जाने को मृत्यु कहते हैं। यह भी समझना आवश्यक है कि आत्मा के शरीर में आने और जाने का क्या रूप है। मृत्यु के पश्चात् शरीर से आत्मा तत्काल नहीं निकलती, पहले नाग वायु कार्य करना बन्द कर देता है, जिस कारण से कण्ठ में पानी आदि नहीं उतरता, इसके पश्चात् कूर्म वायु जो पलकों में रहता है वह कार्य करना बन्द कर देता है, जिस कारण पलकों का चलना बन्द हो जाता है। इसी प्रकार अन्त में प्राण वायु निशक्रिय हो जात है तो नाड़ी आदि भी चलना बन्द हो जाती है। इस अवस्था का नाम मृत्यु है, परन्तु जीवात्मा शरीर में रहता है, वह सबसे अन्त में धनन्जय प्राण के साथ जाता है, उस समय शव में सड़ान बनने लगती है। जीवात्मा शरीर से निकल कर सूर्य की किरणों के साथ आकाश में चला जाता है, वहाँ से जब परमात्म व्यवस्था के अनुसार, जीव गगन मण्डल में आकर वर्षा की जल धारा के साथ भूमि पर अन्न, वनस्पतियों आदि में आता है। अन्न, वनस्पति, फल आदि को खाकर मानव शरीर में जीव पहुंचता है, शरीर में रस, रक्त, मांस, मज्जा आदि में होकर वीर्य में स्थित हो जाता है और गर्भाधान के समय स्त्री के गर्भाशय में स्थित होकर समय आने पर जन्म लेता है। जीवात्मा किसी भी शरीर से एकदम न निकल कर जाता है और न बिना क्रम के शरीर में प्रवेश करता है।

जल में डूबने पर शरीर पानी पी जाता है और सड़ने पर पानी के ऊपर आ जाता है। रेल अथवा ट्रक आदि से कुचल जाने पर जीव तत्काल धनन्जयप्राण के साथ निकल जाता है। मूल बात यह है कि शरीर बिलकुल ही नष्ट हो जाने के पश्चात् ही धनन्जयप्राण शरीर से निकलता है और उसी के साथ ही जीव भी चला जाता है। अर्थात् जीव और धनन्जयप्राण, शरीर से, सबसे अन्त में एक साथ ही निकलते हैं। धनन्जय प्राण सम्पूर्ण शरीर की त्वचा के साथ समस्त शरीर में व्याप्त रहता है, इसके रहते हुए शव गलता, सड़ता नहीं, इसके निकल जाने पर शव गलने, सड़ने और फूलने लगता है।

परकाया प्रवेश कोई सिद्धि नहीं

महर्षि पातञ्जली योग के एक मात्र अधिकारी मनीषी हैं, उनका 'योग दर्शन' सर्व माननीय अधिकारी ग्रन्थ है।

योग दर्शन में अंकित सिद्धियाँ—

— सूर्य में संयम करने से लोक लोकान्तरों का ज्ञान हो जाता है।
— चन्द्रमा में संयम करने से—नक्षत्रों की स्थिति का ज्ञान हो जाता है।
— ध्रुव में संयम करने से—उन नक्षत्रों की गति का ज्ञान हो जाता है।
— नाभि चक्र में संयम करने से—शरीर की रचना का ज्ञान हो जाता है।
— कण्ठ कूप अर्थात् मुख में जिव्हा मूल के नीचे कूप उसमें संयम करने से भूख प्यास की निवृत्ति हो जाती है।
— कूर्मनाड़ी अर्थात् ग्रीवा कूप (गर्दन के नीचे जो खाली स्थान है इसी को ग्रीवा कूप कहते हैं) में संयम करने से — चित्त और शरीर की स्थिरता प्राप्त होती है।
— मूर्धा — ब्रह्मरन्ध्र अर्थात् शरीरस्थ ब्रह्माण्ड की ज्योति में संयम करने से—सिद्ध पुरुषों के दर्शन होते हैं।
— हृदय में संयम करने से चित्त का ज्ञान हो जाता है।
— चित्त के बन्धन के कारण शिथिल करने तथा गति मार्ग का ज्ञान होने पर चित्त का दूसरे के शरीर में प्रवेश किया जा सकता है। अर्थात् दूसरे के चित्त की बात को जान लेना। इसी साधन को पर—काया प्रवेश कह देते हैं, जो नितान्त गलत है। इस साधन का लाभ दूसरे के शरीर में प्रवेश करके उसके चित्त की बात को जान लेना ही है। न के मृत शरीर को जीवित कर देना।
— उदान वायु जो शरीरस्थ सन्धियों में रहता है, पर विजय प्राप्त कर लेने पर योगी जल, कीचड़, काँटे आदि के ऊपर सुगमता से चल सकता है और इच्छित मृत्यु को प्राप्त होता है।
— समान वायु जो शरीरस्थ नाभि में रहता है पर विजय प्राप्त कर लेने से योगी का शरीर ज्वाला के समान दीप्तिपान, अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है।

— श्रोत्रेन्द्रिय और आकाश में संयम करनें से दिव्य शब्द सुनाई देते है।
— शरीर आकाश और रुई समान हल्की वस्तु में संयम करने से आकाश में उड़ने की सिद्धि प्राप्त होती है।

योग को भ्रष्ट करने वाले योगियों ने योगिक सिद्धियों के नाम से न जाने कितनी ही अत्यन्ताभाव वाली सिद्धियाँ जोड़ दी हैं, जो वास्तव में विकल्प वृत्ति कहलाती है। क्योंकि वह अज्ञानियों के द्वारा कही जाने पर शब्द रूप में तो स्थित है परन्तु वह अत्यन्त अभाव से ग्रसित होने पर वह व्यवहार रूप में स्थित नहीं है। क्योंकि वह अज्ञानियों के द्वारा कही जाने पर वह शब्द रूप में तो स्थित हैं परन्तु वह अत्यन्ताभाव से ग्रसित होने पर वह व्यवहार रूप में स्थित नहीं है।

हमने जिन सिद्धियों की चर्चा की है वास्तव में वे ही योगिक सिद्धियाँ सत्य हैं, अन्यः त्याज हैं।

कहा जाता है कि श्री शंकराचार्य जी महाराज का श्री मण्डन मिश्र जी के साथ शास्त्रर्थ हुआ था, उसकी मध्यस्थता मण्डन मिश्र जी की पत्नी ने की थी, मण्डन मिश्र के परास्त हो जाने के पश्चात्, मण्डन मिश्र जी की पत्नी ने शास्त्रार्थ किया, उसमें उन्होंने गृहस्थ सम्बन्धी प्रश्न सामने रखे, इस पर श्री शंकराचार्य जी ने कहा—माता मैं अखण्ड ब्रह्मचारी हूँ आपके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता, उसके लिये मुझे एक मास का समय चाहिये। शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

कहा जाता है कि किसी राजकुमार की मृत्यु हो गई। शंकराचार्य जी ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम मेरे शरीर की रक्षा करना मैं एक मास के लिये राजकुमार के शरीर में प्रवेश करने जा रहा हूँ।

एक मास के पश्चात् शंकराचार्य जी अपने शरीर में वापिस आ गये। यह एक घटना परकाया प्रवेश की कही जाती है।

इस घटना पर मेरे मन में कई शंकायें उठ रही हैं।

१— शंकराचार्य जी का शरीर एक मास तक कैसे सुरक्षित पड़ा रह गया? जब के धनन्जय प्राण के साथ आत्मा और आत्मा के साथ धनन्जय प्राण अर्थात् दोनों ही एक साथ आते—जाते हैं, जब आत्मा निकल कर राजकुमार के शरीर से चली गई, तो उसके साथ ही धनन्जय प्राण भी चला गया, जब धनन्जय प्राण चला गया तो शरीर

बिना विकृत हुए नहीं रह सकता। धनन्जय प्राण के चले जाने के पश्चात् पुन: धनन्जय प्राण सक्रिय नहीं होता। धनन्जय प्राण अकेला कभी नहीं आता, वह सभी प्राणों के साथ ही आता है।

२— राजकुमार का शरीर रोगग्रस्त होने के कारण विकृत हो गया था तभी उसे आत्मा और धनन्जय प्राण ने त्याग दिया था। तो ऐसे विकृत शरीर से शंकराचार्य जी ने कैसे गृहस्थ भोग किया होगा।

३— एक मास का गृहस्थ भोग के पश्चात् जब शंकराचार्य जी लौटे थे तो उसके पश्चात् शंकराचार्य जी का और मण्डन मिश्र जी की पत्नी के शास्त्रार्थ की चर्चा कहीं नहीं मिलती, कि इन दोनों का शेष शास्त्रार्थ कब और कहाँ हुआ था।

४— योगी ध्यानावस्था में बैठ कर ही इन सब प्रश्नों के समाधान का ज्ञान प्राप्त कर सकता है, जैसे महर्षि दयानन्द जी ने प्राप्त कर संस्कार विधि की रचना की। इससे यह भी ज्ञात होता है कि श्री शंकराचार्य जी महाराज अखण्ड ब्रह्मचारी तो थे परन्तु योगी नहीं थे।

इस प्रकार यह घटना सरासर काल्पनिक और असत्य ही सिद्ध होती है।

प्रंश्न उठता हैं, तो फिर इसका वास्तविक स्वरूप क्या है।

वास्तव में यह शास्त्रार्थ ही नहीं हुआ। बिहार के एक विद्वान् पण्डित ने पाली भाषा में लिखा है—

जब श्री शंकराचार्य जी महाराज पण्डित मण्डन मिश्र जी से मिले और कुछ ही क्षणों की चर्चा में श्री शंकराचार्य जी ने यह जान लिया कि यह भी महान पण्डित, ज्ञानी और विवेकी है और मन ही मन कहने लगे "यह तो मेरा ही प्रति रूप है।" यह विचार कर उस स्थान पर एक ताल है उसमें स्नान करके श्री शंकराचार्य जी महाराज चले आये। आज भी उस ताल का नाम शंकर ताल है।

युवा शरीर में आत्मा का प्रवेश

कल्याण का विषेशांक ४३ पृष्ठ ५३२ युवा शरीर में आत्मा का प्रवेश:।

आसाम वर्मा की सीमा पर नदी के किनारे सैनिक अधिकारी घूम रहे थे। उन्होंने नदी में बहती कोई चीज देखी टेलीस्कोप लगाया, वह नवयुवक की लाश थी। एक वृद्ध व्यक्ति उसे बाहर निकाल रहा था। बाहर निकाल कर पास कें एक पेड़ के पीछे ले गया। कुछ समय तक अधिकारी देखता रहा। आश्चर्य से देखा कि वह लाश गीली पोशाक में चलती जा रही थी। सैनिक अधिकारी ने उसे पकड़ने का आदेश दिया।

उसे मेरे सामने लाया गया, मैंने उससे पूछा तुम कौन हो? कुछ समय पहले तुम एक मुर्दा रूप में बहे जा रहे थे, अब तुम जिन्दा हो। यह सब क्या रहस्य है? बूढ़े ने कहा—'मैं स्वयं ही वही बूढ़ा हूँ।' मैं योग जानता हूँ। जिससे वह शरीर बदल सके। वह अपनी इच्छा से आदमियों या अन्य प्राणियों के शरीर में अपने आत्मा को प्रविष्ट करा सकता है परन्तु एक जीवित व्यक्ति के शरीर में नहीं। पेड़ के पीछे निर्जीव शरीर पड़ा है, उसे उठाकर लाया गया।

इस घटना पर भी मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं—

१. बहती हुई लाश कैसे जान ली की यह नवयुवक की है?

२. शव जल के ऊपर तैरता हुआ बहता जा रहा है। जब शव पानी पी लेता है और अन्दर से गलने और सड़ने लगता है, तभी वह जल के ऊपर आता है, और उसमें सभी प्राण क्रियाहीन हो जाते हैं धनन्जय प्राण न होने से सड़ने लगता है। जब शरीर गलकर नष्ट हो गया और जल के ऊपर आ गया तो वह शरीर किसी योगी के लिये क्यों कर और कितना उपयोगी हो सकता है, उसके सभी प्राण क्रिया हीन होकर समाप्त हो गये, बिना प्राणों के यह शरीर कैसे चल सकता है? उसका अनुमान आप स्वयम् ही लगा सकते हैं।

३. बूढ़े ने बताया, मैं योग जानता हूँ जिससे वह शरीर बदल सके,

वह अपनी इच्छा से आदमियों या अन्य प्राणियों के शरीर में अपने आत्मा को प्रविष्ट करा सकता है।

हम पूर्व लिख चुके हैं कि योग में कोई भी ऐसी सिद्धि नहीं है जो परकायाप्रवेश कर सके।

४. लगता है किसी चतुर व्यक्ति ने यह कहानी रची है, जो सरासर मिथ्या और असत्य ही है।

काया कल्प

प्रश्न उठता है कि महर्षि पातंजली जी ने जहाँ बहुत सी सिद्धियों के साधन दिये हैं, वहाँ परकाया प्रवेश पर क्यों ध्यान नहीं दिया? उसका समाधान तो यही समझ में आता है कि परकाया प्रवेश द्वारा योगी जब अपनी आयु बढ़ाकर इसी जन्म में मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक बने होते हैं। यह बात संगति युक्त है। परन्तु प्रत्येक काया में कोई न कोई दोष छिपा होता है। जिस कारण उसकी काया, परकाया प्रवेश द्वारा उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकेगी, क्योंकि उसकी काया को उसके अपने स्वभाव, रुचि आदि के अनुसार भोजन, व्यसन, व्यवहार उसकी काया में समाये रहते हैं, जो योगी जीवन के लिये अहित कर ही हो सकते हैं। इसी कारण महर्षि, योगी जनों ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया होगा।

प्रश्न उठता है कि योगी अपने साधन को परम लक्ष के अन्तिम छोर तक इसी जन्म में कैसे ले जा सकता है? इसका समाधान आयुर्वेद ने किया है। वह कहता है कि परमात्मा ने कायाकल्प के लिये अनेक जड़ी बूटियों को उत्पन्न किया है, उनका सेवन कर चिरायु प्राप्त कर, अपने भोजन, व्यसन, व्यवहार आदि को बिना किसी बाधा के उसी अनुरूप चला कर अपने साधन को परमलक्ष के अन्तिम छोर तक ले जा सकता है। हम यहाँ इससे सम्बन्धित चर्चा अंकित करते हैं।

१. दो व्यक्ति पर्यटन के लिये चले साथ में एक रसोइया भी ले लिया। मार्ग में चलते हुए रसोइये ने जंगल से एक पेड़ की लकड़ी की टहनी

उठा ली। एक स्थान पर टिके, रात्रि को शयन किया, प्रातः काल उठकर दोनों मित्र शौच, स्नानादि के लिये गंगा तट की ओर चले गये, रसोइये से कहा—तुम भोजन के बनाने की व्यवस्था करो। रसोइये ने उर्द की धोबा दाल बटलोई में चढ़ा दी। जंगल से उठाकर लाई हुई टहनी से बार—बार चलाता रहा, दाल पक कर तैयार हो गई, उसने देखा जंगल की टहनी से चलाने के कारण दाल काली पड़ गई। वह घबरा उठा कि यह क्या हुआ, उसने झटपट उस दाल को अलग रखकर दूसरी दाल और चढ़ा दी, उस टहनी को फैंक दिया, पहली दाल रसोइये ने खाली। जब तक दोनों मित्र लौट कर आये तो उन्होंने देखा कि यह कौन रसोइया, रसोई बना रहा है, पास आकर पूछा तो उसने कहा—मैं वही हूँ जो आपके साथ आया था, मित्रों ने कहा—कि वह अधेड़ आयु का था, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ रही थीं, तुम जवान लग रहे हो, तुम वह नहीं, सही बताओ क्या बात है? तब रसोइये ने सारी बात बताई और तीनों जनें उस टहनी को ढूंढने लगे, परन्तु वह हाथ नहीं आई। रसोइये ने दर्पण में अपना मुख देखा तो उसे भी बड़ा आश्चर्य होने लगा। जंगल से उठाकर लाई हुई टहनी ने कितना कमाल कर दिया।

२. जंगल में घूमते हुए एक व्यक्ति को एक स्थान पर रीछ बैठा हुआ मिल गया। रीछ बार—बार पैर को उठा—उठा कर देख रहा था। उसके पैर में बहुत पीड़ा दीख रही थी, वह चल नहीं पा रहा था। इस व्यक्ति ने साहस करके रीछ के पास जाकर देखा, रीछ बार बार पैर को उठा कर देख रहा था। उसने पास जाकर रीछ के कष्ट दाई पैर को देखा, उसमें काँटा लगा हुआ था, उसने उस काँटे को निकाल दिया और पीछे हटकर खड़ा हो गया। रीछ ने पैर को जीभ से चाटा और खड़ा हो गया। व्यक्ति मृत्यु के भय से चुपचाप वहीं बैठ गया। रीछ उठकर चला गया। उसने सोचा अब रीछ चला गया, मैं भी चुपके से निकल चलूँ, जैसे ही वह उठा, उसके सामने रीछ आकर खड़ा हो गया। यह देखकर वह फिर बैठ गया। रीछ भी छलाँग लगा कर दूर चला गया जैसे ही उसने चलने का विचार बनाया तैसे ही रीछ फिर सामने आकर खड़ा हो गया। यह क्रम कई बार चलता रहा, व्यक्ति ने सोचा.

पता नहीं यह रीछ क्या सोच रहा है। अब चुपचाप यहीं पर ही बैठे रहो जो होगा, देखा जायेगा। अबकी बार रीछ जाकर जंगल से एक फल तोड़कर लाया और उसे उसके सामने रखकर बैठ गया। बहुत देर तक बैठा रहा, परन्तु रीछ उठकर जाने को तैयार न था। व्यक्ति को भूख लगने लगी, डरते—डरते उसने फल उठाकर खाने लगा। फल खाने में अच्छा था। जब वह फल खा चुका तो रीछ चला गया और बहुत देर तक रीछ जब वापिस नहीं आया तो वह भी उठकर मार्ग खोजते हुए जंगल से बाहर निकल कर घर पर आ गया।

घर पर आते ही उसके शरीर में हलकी हलकी सूजन होने लगी, रात को सो गया, प्रातः उठा नहीं जा रहा था, शरीर बहुत सूज गया था। सोचने लगा रीछ ने मुझे क्या खिला दिया। भूँख प्यास सब कुछ बन्द हो गई। तीन दिन तक ऐसे ही पड़ा रहा। चौथे दिन सूजन पटकले लगी, शरीर पर झुर्रियाँ पड़ने लगीं, सूजी हुई त्वचा फटने लगीं, उसने बड़ी सावधानी से अपने शरीर की कारी त्वचा को नोच—नोच कर उतार दिया।

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसका सारा शरीर निरोगी, स्वस्थ्य और युवा के समान हो गया।

यह फल देखने में करेले के समान था परन्तु खाने में मीठा था। इस प्रकार रीछ ने अपने पैर के काँटे को निकालने वाले के कायाकल्प रूप में यह बूँटी खिलाकर अपने ऊपर किये गये उपकार का ऋण उतार दिया। मीठे करेले की पहचान रीछ को सबसे अधिक होती है।

३. हिमालय पर्वत क्षेत्र में मानसरोवर झील के किनारे पर एक वनस्पति सोमफलता होती है, इसे सोमबल्ली भी कहते हैं। इस पर चन्द्रमा की कला के अनुसार, चन्द्रमा आकारानुसार १५ दिन तक पत्ते आते हैं और चन्द्रमा के क्षय पक्षानुसार एक एक करके १५ दिन तक गिरते चले जाते हैं। इसे कायाकल्प बूँटी भी कहते हैं। अमावस्या के पश्चात् वृद्धि कला से पौर्णमासी के दिन तक १५ पत्तों की पूरी टहनी को पानी में घोटकर मिलाया जाता है। सेवन कर्त्ता को एक सुरक्षित स्थान पर एक सुयोग्य वैद्य की देखरेख में, इस बूँटी का सेवन कराना

चाहिये! अगले दिन से चन्द्रमा की घटती कला के अनुसार शरीर क्षीण होने लगता है। अर्थात् अमावस्या के दिन तक पुराना मल विक्षेप आदि सब शरीर से निकल कर बाहर हो जाता है। अगले दिन से चन्द्रमा की कला के साथ–साथ शरीर में भी वृद्धि होने लगती है और पौर्णमासी के दिन पूर्ण स्वस्थ्य होकर नया जीवन, यौवन, केश, नेत्र, दाँत आदि सब कुछ स्वस्थ्य हो जाते हैं।

४. पन्ना भस्म सब प्रकार के विषों को नष्ट करता है, सब रोगों में रसायन गुण दर्शाता है। जारित पारद के योग से युक्त पन्ना भस्म समाधि सिद्धि प्रदान करता है।

योग दर्शन के कैवल्य पाद के प्रथम सूत्र को देखिये।

जन्मौषधिमन्त्रतप: समाधिजा: सिद्धय:।।

जन्म, औंषधि, मन्त्र, तप और समाधि से उत्पन्न होने वाली पाँच प्रकार की सिद्धियाँ होती हैं।

देह को निरोग और सुदृढ़ बनाने के लिये शिलाजीत सर्वोत्तम है। यह बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, गर्भवती प्रसूता सबके लिये लाभदायक है।

रसोपरस–सूतेन्द्ररत्न–लोहेषु ये गुणा:।
वसन्ति ते शिलाधातौ जरा–मृत्यु–जिर्गपया।।

सब प्रकार के जीर्ण दु:खदायी रोग, मेदोवृद्धि और मधुमेह के लिये शिलाजीत को अति हित कर माना है। शिलाजीत के सेवन से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है और आयु की वृद्धि होती है।

अभ्रक भस्म का किञ्चित मात्र सेवन से, मन स्थिर होने लगता हैं।

इस प्रकार आयुर्वेद ने कायाकल्प को स्थान दिया। कायाकल्प के द्वारा चिरायु प्राप्त कर, बिना किसी बाधा के अपने साधन को परमलक्ष के अन्तिम छोर तक ले जा सकता है।

वेदं शरणम् आगच्छामि
सत्यं शरणम् आच्छामि
यज्ञं शरणम् आगच्छामि
इति

वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

वेद सबके लिये उपकारी है।

वेद सबको पढ़ना चाहिये।